वर्ष : 18 अंक: 31 | आगरा | शनिवार 05 अप्रैल 2025 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रु.

उत्तरप्रदेश ,मध्यप्रदेश,छत्तीसगढ़,नई दिल्ली व राजस्थान से एक साथ प्रकाशित

सांध्य पहल

उत्तरप्रदेश में सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला हिन्दी दैनिक

आज का तापमान
अधिकतम 38 डिग्री
न्यूनतम 20 डिग्री

संक्षिप्त समाचार

एक्टर-डायरेक्टर मनोज कुमार का 87 की उम्र में निधन

मुंबई,एजेंसी। एक्टर मनोज कुमार का शुक्रवार सुबह मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में निधन हो गया। वे 87 साल के थे। वे विशेष रूप से अपनी देशभक्ति फिल्मों के लिए जाने जाते थे। उन्हें भारत कुमार के नाम से भी जाना जाता था। उपकार, पूरब-पश्चिम, क्रांति, रोटी-कपड़ा और मकान उनकी बेहद कामयाब फिल्में रहीं। मनोज कुमार के बेटे कुणाल गोस्वामी ने ANI को बताया, उन्हें लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां थीं। यह भगवान की कृपा है कि उन्हें आखिरी समय में ज्यादा परेशानी नहीं हुई, शांतिपूर्वक उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनका अंतिम संस्कार कल सुबह 11 बजे मुंबई के पवनहंस श्मशान घाट पर होगा। मनोज कुमार काफी समय से लिवर सिरोसिस से जूझ रहे थे। उनकी हालत बिगड़ने के बाद उन्हें 21 फरवरी 2025 को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। मनोज कुमार को 7 फिल्म फेयर पुरस्कार मिले थे। पहला फिल्म फेयर 1968 में फिल्म उपकार के लिए मिला था। उपकार ने बेस्ट फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर, बेस्ट स्टोरी और बेस्ट डायलॉग के लिए चार फिल्म फेयर जीते। 1992 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 2016 में उन्हें दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड से नवाजा गया।

गाजा में और 2,80,000 लोग हुए विस्थापित : संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र ,एजेंसी। गाजा में दो सप्ताह पहले युद्ध बढ़ने के बाद से लगभग 280,000 गाजावासी और विस्थापित हुए। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय सहायताकर्ताओं के अनुसार, इनमें से कुछ को भीड़भाड़ वाले, शेल्टर में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। द यूएन ऑफिस फॉर द कॉर्डिनेशन अफेयर्स (ओसीएचए) के मुताबिक, इजरायली की तरफ से और अधिक विस्थापन आदेश जारी किए गए हैं, जिससे लोगों को सुरक्षा की तलाश में फिर से पलायन करने को मजबूर होना पड़ा है।

सीएम योगी से पुष्कर धामी तक, मनोज कुमार के निधन पर गणमान्यों ने जताया दुख, बोलेः 'ये एक युग का अंत'

नई दिल्ली ,एजेंसी। अभिनेता मनोज कुमार के निधन पर फिल्म जगत के साथ ही राजनीतिक जगत में भी शोक व्याप्त है। उनके निधन पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई नेताओं ने शोक जताया। सभी ने उनके निधन को कला और फिल्म जगत के लिए अपूरणीय क्षति माना। सीएम योगी ने एक्स हैंडल पर लिखा, महान अभिनेता, प्रख्यात फिल्म निर्देशक, पद्मश्री मनोज कुमार का निधन अत्यंत दुःखद तथा कला एवं फिल्म जगत की अपूरणीय क्षति है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! मेरी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवार के साथ हैं। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोकाकुल परिजनों और उनके प्रशंसकों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

धार्मिक नगरों में पवित्र भाव और परिवारों में स्वस्थ वातावरण बनाए रखने के लिए लागू की शराबबन्दी : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

पीताम्बरा माई सहित देवी माँ की कृपा वाले सभी स्थानों को देवी लोक के रूप में विकसित किया जाएगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का दतिया में शराब बन्दी लागू करने पर हुआ भव्य नागरिक अभिनंदन

भोपाल/दतिया,ब्यूरो। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 'वसुधैव कुटुंबकम' के विचार वाली भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व को परिवार मानती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में और मार्गदर्शन में इस सिद्धांत पर चल रही राज्य सरकार सभी के हित और कल्याण के लिए समर्पित है। परिवारों का वातावरण खराब ना हो, मेहनत से कमाए गए पैसे का उपयोग परिवार के हित में हो, यह सुनिश्चित करने के लिए ही शराब बंदी लागू की गई है। धार्मिक नगरों में पवित्र भाव की अनुभूति होती है, अतः प्रदेश में विद्यमान 17 देवस्थानों की गरिमा को बनाए रखने के लिए ही इन स्थानों पर शराबबंदी लागू की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव माँ पीताम्बरा की नगरी दतिया में शराब बंदी लागू करने के लिए आयोजित उनके नागरिक अभिनंदन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया सहित प्रदेश में जहां-जहां देवी मां की कृपा है, वहां देवी लोक विकसित किए जाएंगे। चित्रकूट सहित भगवान राम से जुड़े प्रदेश के सभी स्थानों का श्री राम वनपथ गमन मार्ग के अंतर्गत उन्नयन किया जा रहा है। इसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण की जहां-जहां भी लीलाएं हुईं, उन स्थानों को भी तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए बजट में प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति के मूल भाव ÷सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः÷ के अनुरूप राज्य सरकार सबके कल्याण के लिए ही समर्पित भाव से कार्यरत है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। राज्य सरकार के लिए कृषकों का हित सर्वोपरि है, किसानों को उनकी मेहनत और उपज का सही दाम मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए ही 2 हजार 600 रुपये प्रति क्विंटल की दर पर गेहूं खरीदा जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रदेश के लिए केन बेतवा लिंक परियोजना और चंबल काली सिंध पार्वती लिंक जैसी सौगात प्रदेश को दी है। इसके साथ ही ताप्ती मेगा रिचार्ज परियोजना को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसानों से जमीन नहीं बेचने का आव्हान करते हुए कहा कि इन नदी जोड़ो परियोजनाओं से दतिया भी लाभान्वित होगा, और किसान परिवारों का खुशहाल जीवन सुनिश्चित है। डबल इंजन की सरकार में जनता का हित सर्वोपरि है, प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में राज्य सरकार ने जो कहा वह करके दिखाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अनावश्यक खर्चों से परहेज करने के लिए जनसामान्य को प्रेरित करते हुए कहा कि शादी विवाह और मृत्यु भोज जैसे आयोजनों में अनावश्यक खर्च करना व्यर्थ है। अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई और उनके भविष्य निर्माण पर ध्यान देना ही परिवारों की सर्वोच्च प्राथमिकता होना चाहिए। हर गरीब को रहने के लिए पक्का मकान, हर जरूरतमंद के लिए भोजन की व्यवस्था जैसी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में संचालित सर्वांगीण विकास और जन कल्याण की गतिविधियां राम राज्य के आदर्श के समान है। कार्यक्रम में पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दतिया सहित प्रदेश के अनेक धार्मिक शहरों में शराबबंदी का जो निर्णय लिया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। शराब की लत के कारण अनेक परिवार परेशानी झेलते हैं।

पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि प्रदेश में युवाओं को रोजगार उपलब्ध हों, इसके लिये मुख्यमंत्री द्वारा न केवल देश में बल्कि विदेशों में जाकर उद्योगपतियों से चर्चा कर प्रदेश में उद्योग स्थापित करने के सार्थक प्रयास किए हैं। उनके प्रयासों के कारण ही अनेक उद्योगपतियों ने प्रदेश में आकर उद्योग धंधे स्थापित कर लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव माँ पीताम्बरा के दरबार पहुँचे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शुक्रवार 4 अप्रैल को दतिया पधारे। दतिया आगमन के अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव माँ पीताम्बरा माई के दरबार पहुँचे और पूजा-अर्चना की। उनके साथ प्रदेश के पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा एवं जनप्रतिनिधि व प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

बयानबाजी से बचें, बांग्लादेश में हिंदूओं की रक्षा ...यूनुस से मुलाकात में पीएम मोदी की दो टूक

बैंकॉक ,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने बैंकॉक में बिम्सटेक शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय बैठक की। पिछले साल अगस्त में शेख हसीना सरकार पतन के बाद नोबेल पुरस्कार विजेता के बांग्लादेश की कमान संभालने के बाद से दोनों नेताओं के बीच यह पहली मुलाकात है।

बैठक के बाद, यूनुस के कार्यालय ने एक्स पर पोस्ट किया, मुख्य सलाहकार प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस और भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को बैंकॉक, थाईलैंड में छठे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन के अवसर पर एक द्विपक्षीय बैठक में शामिल हुए। शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार के पतन और उनके भारत भाग आने के बाद से भारत और बांग्लादेश के संबंध सहज नहीं रहे हैं। यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार को अल्पसंख्यकों समुदाय पर हो रहे हमलों के लिए भारी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। भारत ने इस मुद्दे पर बांग्लादेश के साथ अपनी चिंताओं को बार-बार साझा किया है। दोनों नेताओं के बीच यह बैठक इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण है कि हाल ही में यूनुस चीन की यात्रा करके लौटे हैं। बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के प्रमुख बनने के बाद से यूनुस का रवैया चीन के प्रति खासा नरम रहा है। बुधवार को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने यह संकेत दिया था कि बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में दोनों नेताओं की मुलाकात हो सकती है। रोहिंग्या और प्राथमिकता वाले मुद्दों पर मुख्य सलाहकार के उच्च प्रतिनिधि खलीलुर रहमान ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, हमने भारत से यह वार्ता (दोनों देशों के नेताओं के बीच) आयोजित करने का अनुरोध किया हैज इस बैठक के होने की पर्याप्त संभावना है।

वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ 8 राज्यों में प्रदर्शनः

कोलकाता-अहमदाबाद में पोस्टर जलाए; यूपी में बिल का समर्थन करने पर नमाजी को पीटा

नई दिल्ली,एजेंसी। वक्फ संशोधन बिल के संसद से पास होने के खिलाफ देश में विरोध प्रदर्शन हो रहा है। शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद पश्चिम बंगाल, गुजरात, बिहार, झारखंड, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, असम में मुस्लिमों ने सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किया। इसमें महिला-बच्चे भी शामिल हैं। उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में पुलिस हाई अलर्ट पर है। फ्लैग मार्च जारी है। लखनऊ में दरगाहों और मस्जिदों की ड्रोन से निगरानी की जा रही है। यूपी अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशफाक सैफी को वक्फ संशोधन बिल का समर्थन करने पर जान से मारने की धमकी मिली। उनके बहनोई को पीटा गया। गुजरात के अहमदाबाद में सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग सड़कों पर जुटे। उनके पोस्टर-बैनर पर वक्फ बिल वापस लो, रिजेक्ट यूसीसी लिखा था। लोगों ने बांह पर काली पट्टे बांधी हुई थी। भीड़ ने 'तानाशाही नहीं चलेगी' के नारे लगाए। पुलिस ने 50 लोगों को हिरासत में लिया। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में पार्क सर्कस क्रासिंग में हजारों लोग सड़कों पर जमा हुए। यहां भी वक्फ बिल रिजेक्ट के बैनर-पोस्टर लिए लोग विरोध कर रहे हैं। कोलकाता में कई जगहों पर विरोध हो रहा है। लोगों ने वक्फ बिल के विरोध की तख्तियां जलाईं। रांची में भी हंगामा हो रहा है। लोगों ने कहा कि वक्फ बिल देश के लिए सही नहीं है, मुस्लिमों के लिए सही नहीं है। बिहार में भी बिल के विरोध में लोग सड़कों पर हैं। तमिलनाडु में एक्टर विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कझगम के कार्यकर्ताओं ने बिल का विरोध किया।

बजट सत्र 2025 में संसद ने बनाया नया रिकॉर्ड, 17 घंटे से अधिक चली चर्चा : किरेन रिजिजू

नई दिल्ली ,एजेंसी। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बजट सत्र 2025 के समापन की जानकारी दी। उन्होंने इस सत्र को बेहद उत्पादक बताते हुए कहा कि संसद ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। रिजिजू ने लोकसभा और राज्यसभा के सभी सदस्यों, अध्यक्षों, स्पीकर और राजनीतिक दलों के नेताओं का आभार जताया, जिनके सहयोग से यह संभव हुआ। रिजिजू ने बताया कि इस सत्र में राज्यसभा ने 17 घंटे और 2 मिनट की लंबी चर्चा के साथ इतिहास रचा। संशोधन विधेयक पर यह चर्चा हुई, जिसने 1981 के 15 घंटे 51 मिनट के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ दिया। यह बहस 3 अप्रैल को सुबह 11 बजे शुरू हुई और 4 अप्रैल को तड़के 4÷02 बजे तक चली। खास बात यह रही कि इस दौरान एक भी व्यवधान नहीं हुआ। रिजिजू ने इसे एक बड़ी उपलब्धि करार देते हुए कहा कि इस रिकॉर्ड को तोड़ना मुश्किल होगा।

लोकसभा में भी सत्र बेहद सफल रहा। यहां 13 घंटे से अधिक समय तक रेलवे, ऊर्जा, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय से जुड़े अनुदानों की मांगों पर चर्चा हुई। वहीं, राज्यसभा में शिक्षा, रेलवे, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और गृह मंत्रालय के कामकाज पर विचार-विमर्श हुआ।

रिजिजू ने कहा कि दोनों सदनों में चर्चा के दौरान आलोचना, सुझाव और स्पष्टीकरण का स्वस्थ आदान-प्रदान हुआ, लेकिन कोई स्थगन या व्यवधान नहीं देखा गया। उन्होंने संसदीय टीम के सहयोगियों अर्जुन मेघवान और एल. मोहन, सचिव (संसदीय विभाग) और अन्य अधिकारियों को भी धन्यवाद दिया।

रिजिजू ने कहा, हमने नियमों, परंपराओं और प्रक्रियाओं का सम्मान करते हुए संसद का संचालन किया। सरकार की ओर से हम प्रधानमंत्री, सभी दलों के नेताओं और फ्लोर लीडर्स के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

इस सत्र की उत्पादकता की लोकसभा अध्यक्ष और राज्यसभा सभापति पहले ही सराहना कर चुके हैं। रिजिजू ने इसे दोहराते हुए कहा कि सदस्यों के धैर्य और योगदान से यह संभव हुआ। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में सवालों के लिए भी समय दिया और कहा कि कोई स्पष्टीकरण चाहिए हो, तो पूछा जा सकता है।

हां, मैं जुनूनी हूं : संसद में राष्ट्रीय हित की आवाज उठाने पर राघव चड्ढा ने दिया जवाब

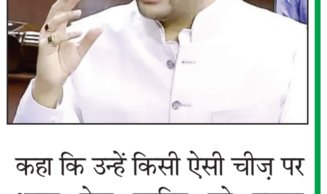

नई दिल्ली ,एजेंसी। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने शुक्रवार को देश के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए हमेशा प्रयास करने को लेकर अपनी प्रतिबद्धता को उजागर करते हुए, सोशल मीडिया पर चेयरमैन जगदीप धनखड़ के साथ बातचीत का एक वीडियो क्लिप पोस्ट किया, जिसका शीर्षक था, हां, मैं जुनूनी हूं। यह पोस्ट गुरुवार को प्रश्नकाल के दौरान सामने आए एक प्रकरण से संबंधित है, जब चड्ढा ने अमेरिकी बिजनेस टाइकून एलन मस्क और उनकी सैटेलाइट इंटरनेट कंपनी स्टारलिंक से जुड़े एक मुद्दे को उठाया। जैसे ही पंजाब के सांसद ने चीजों को संदर्भ में रखना शुरू किया और यूक्रेन में मस्क के कामों के बारे में बताया, तो अध्यक्ष ने मजाक करते हुए उन्हें टोका कि वे हमेशा कोई और क्या कर रहा है इसी बारे में क्यों सोचते रहते हैं। अध्यक्ष ने उनसे यह भी कहा कि उन्हें किसी ऐसी चीज़ पर ध्यान देना चाहिए जो ज्यादा भारतीय हो। इस पर चड्ढा ने जवाब देते कहा, सर, मैं ऐसी हर चीज से पूरी तरह जुड़ा हुआ हूं जो भारतीय हितों और विशेष रूप से भारतीय आर्थिक हितों को नुकसान पहुंचाती है। और यही बात मुझे सदन में लाती है और मैं अपने देश को नुकसान पहुंचाने वाले हर मुद्दे को जोश से उठाता रहूंगा। चड्ढा ने स्टारलिंक द्वारा भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के साथ कथित असहयोग पर प्रकाश डालने से पहले तर्क किया, सर, आप समझ गए होंगे कि मेरा सवाल सिर्फ और सिर्फ भारत के बारे में है।

वफ संशोधन बिल पर मायावती ने जताई असहमति, कहाः सरकार जल्दबाजी में लाई बिल

लखनऊ ,एजेंसी। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने वक्फ संशोधन बिल पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने इसको लाने में जल्दबाजी की है। इस बिल से पार्टी सहमत नहीं है।

बसपा मुखिया मायावती ने शुक्रवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि संसद में वक्फ संशोधन बिल पर सत्ता और विपक्ष को सुनने के बाद, निष्कर्ष यही निकलता है कि केंद्र सरकार यदि जनता को इस बिल को समझने के लिए कुछ और समय दे देती तथा उनके सभी संदेहों को भी दूर करके जब इस बिल को लाती तो यह बेहतर होता। उन्होंने आगे कहा कि दुःख की बात यह है कि सरकार ने इस बिल को बहुत जल्दबाजी में लाकर जो इसे पास कराया है, यह उचित नहीं है और अब इस बिल के पास हो जाने पर यदि सरकार इसका दुरुपयोग करती हैं, तो फिर बसपा मुस्लिम समाज का पूरा साथ देगी, अर्थात ऐसे में इस बिल से पार्टी सहमत नहीं है। ज्ञात हो कि वक्फ बिल लोकसभा से आसानी से पारित होने के बाद राज्यसभा से भी पारित हो गया। बिल के पक्ष में 128 और विपक्ष में 95 वोट पड़े। अब विधेयक को कानून बनने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के पास उनकी मंजूरी के लिए भेजा जाना आवश्यक होगा। इसके पहले केंद्र सरकार ने बुधवार को लोकसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पास करा लिया। सरकार को एनडीए के सभी घटक दलों का समर्थन मिला और विधेयक के पक्ष में वोट किया। हालांकि अभी विपक्षी दल इसका विरोध करके सवाल उठा रहे हैं। इस बिल को पेश करने के बाद दोनों सदनों में लंबी बहस सुनने और देखने को मिली। राज्यसभा में वक्फ बोर्ड बिल के पक्ष में जेपी नड्डा ने कहा कि हमें उम्मीद है सदन इस बिल का समर्थन करेगा। उन्होंने कहा कि 2013 में इस बिल के लिए जब जेपीसी बनी थी, तब उसमें 13 सदस्य थे। मोदी सरकार में बनी जेपीसी में 31 सदस्य थे। डेमोक्रेसी का मानक यह नहीं है कि हम आपकी ही बात मानें। वाद-विवाद तर्क पर होगा।

गुरुवार की रात्रि में तहसील किरावली की दो गांवों में तीन स्थानों पर हुई चोरी

लाखों की नगदी और जेवरात ले भागे चोर

किरावली। रामराज्य कहे जाने वाले प्रदेश के जिला आगरा के तहसील क्षेत्र के गांव मसेल्या ,और गांव रोझौली के दो घरों में चोरो ने तांडव मचाया। परिवार वाले घरों में सोते रहे आंखें खुली तो सामान बिखरा देख दंग रह गए। जानकारी हुई कि घरों के सारी नगदी जेवरात को चुरा ले गए पुलिस का मानना है कि बदमाशों ने पहिले रैकी कर मामला प्रतीत होने की जानकारी दी।

थाना कागारौल क्षेत्र के ग्राम मसैल्या में

सोते दंपति को कमरे में बंद कर चोर लाखों की नगदी और जेवरात ले उड़े बताया जाता है कि दूधाधारी इंटर कॉलेज में वरिष्ठ प्रवक्ता जुगेंद्र सिंह, ठेकेदार चंद्रवीर सिंह और सुभाष चाहर अपने पिता के साथ गांव मसैल्या में रहते हैं। गांव में ज्यादातर सुभाष और उनके पिता ही रहते हैं। बाकी दोनों भाई का आना- जाना रहता है। पीड़ित चंद्रवीर ने बताया कि उनके पिता दंगल देखने कहीं गए थे। घर में छोटा भाई सुभाष और उसकी पत्नी ही थे। रात में चार-पांच बदमाश घर में घुसे और जिस कमरे में सुभाष और उसकी पत्नी सो रहे थे, उसे बाहर से बंद कर दिया । चोरों ने इसके बाद पूरे घर में तांडव मचाया। सारा सामान इधर से उधर डाल दिया। अलमारियां तोड़कर उसके अंदर रखे करीब 5.70 लाख रुपये नगद और करीब 15-20 लाख रुपये के जेवरात चुराकर ले गए। चंद्रवीर ने बताया कि हाल ही में उन्होंने आलू बेचा था, जिसकी नगदी घर में ही रखी हुई थी। साथ ही तीनों भाइयों के जेवरात भी वहां रखे हुए थे। उनका कहना है कि यह चोरी नहीं बल्कि डकैती है। उनको आशंका है कि घर में घुसने वाले बदमाश पहले से रेकी कर रहे होंगे। चोर खाली बक्से आदि खेतों में भी फेंक गए। सुबह चोरी की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर एकत्रित हो गए। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद वह चोरों की तलाश में जुट गई है। वहीं गांव मसेल्या से दो किलोमीटर दूर थाना फतेहपुर सीकरी के गांव रोझौली में दो घरो ने नकदी जेवर चोरी कर ले गए। पुष्पेन्द्र पुत्र रनवीर सिंह पशु चिकित्सा प्राइवेट काम करते हैं उन्होंने बताया कि गुरवार की रात्रि बीच चौक में सो रहे थे रात्रि एक बजे के लगभग बरसात आने पर आंखें खुली तो घर के दरवाजे अलमारी गोदरेज का सामान बिखरा देख दंग रह गए। जब देखा तो 53 सौ रुपए नगदी दो जोड़ी तोडिया दो जोड़ी बीछिया,एक चांदी की मूर्ति एक अंगूठी गायब थी।जब शोरमचया तो पुष्पेन्द्र के ताऊ बीरभान सिंह पूर्व फौजी के घर से पुत्र बधू का मंगलसूत्र और अलमारी से छः रम की शराब की बोतल चोरी हो गई।घटना की जानकारी पुलिस को दी पुलिस ने मौके पर पहुंच कर निरीक्षण कराया है और फॉरेंसिक टीम द्वारा निरीक्षण करा कर जांच में जुट गये।

गेहूं के खेत में लगी आग किसानों ने कडी मसकद से पाया काबू

अग्निशमन कर्मियों की बात को सुन किसान भड़के

किरावली। तहसील के गांव दूरा में शुक्रवार को शाम साढ़े तीन बजे गेहूं के खेत में आग लग गई। खेतों काम कर रहे किसानों ने दौड़ कर पानी फेंक और पेड़ों की लफरों से पीट पीट कर आग पर 4 बजकर 20 मिनट पर काबू पा लिया । किसानों के द्वारा डायल 112 अग्निशमन केंद्र, एसडीएम किरावली को सूचना दी गई। अग्निशमन को सूचना देने के चालीस मिनट बाद पहुंची गाडी के कर्मचारियों की बात सुनकर किसान आग बबूला हो गए। सत्यवीर पुत्र महेन्द्र सिंह ने बताया कि बिजेंद्र सिंह कहरवार चाचा का तीन बीघा खेत भेज पर लेकर गेहूं की खेती की थी। जिसमें कंपास के जरिए गेहूं को गुरुवार रात्रि में निकलवा लाया था जिसमें 20 से तीस परसेंट गेहूं और भूसा रह गया था जिसे शुक्रवार शाम को रीपर से निकलवाना था तो शाम साढ़े तीन बजे अज्ञात कारणों से खेत में आग लग गई।आग की लपेटे को देख खेतों में काम कर रहे किसान और ग्रामीणों राहगीरों ने आग पर काबू पाया लिया जिसके बाद चालीस मिनट देरी से पहुंची अग्निशमन गाडी के कर्मचारियों ने अपने किसी उच्चाधिकारियों से मोबाइल पर कह रहा था कि कूड़े में आग लगा दी है।यह बात सुन वहा के किसान भडक गये।और कहा सुनी कर खरी-खोटी सुना दी।जिसके बाद अग्निशमन कर्मियों ने चार मिनट जले स्थान पर पानी का प्रेसर चला कर चले गए।

और कहा कि गांव डाबर में आग लग गई जिसे भी बुझाने जाना है यह बात सुनकर मीडियाकर्मियों ने मोबाइल के जरिए जानकारी जुटाई गई लेकिन ग्रामीणों ने आग की कोई पुष्टि नहीं हुई। जिससे ज्ञात होता है कि अग्निशमन कर्मी बहाना बना कर भाग गए। सत्यवीर पुत्र महेन्द्र सिंह दूरा निवासी ने बताया कि खेत ढाई बीघा खेत में तीस परसेंट गेहूं व ढाई का पूरा भूसा जल कर राख हो गया है।

डीएओ ने उर्वरक कम्पनी प्रतिनिधि एवं थोक उर्वरक विक्रेताओं के साथ की बैठक

आईएफएमएस पोर्टल पर अक्रियाशील उर्वरक लाइसेंस वाले विक्रेताओं को न की जाए उर्वरक आपूर्ति

अलीगढ़। जिला कृषि अधिकारी धीरेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता में शुक्रवार को जिले में कार्यरत क्रियाशील व अक्रियाशील थोक व फुटकर उर्वरक विक्रेताओं के सम्बन्ध में उर्वरक समीक्षा बैठक का आयेजन किया गया। बैठक में जिले के सभी उर्वरक कम्पनी प्रतिनिधि एवं समस्त थोक उर्वरक विक्रेता उपस्थित रहें। डीएओ ने स्पष्ट निर्देश दिये कि जिन उर्वरक विक्रेताओं के उर्वरक विक्रय प्राधिकार पत्र या उर्वरक लाइसेंस आईएफएमएस पोर्टल पर क्रियाशील नहीं है या अपडेट नहीं है उनको किसी प्रकार के उर्वरक की आपूर्ति न की जाए। उन्होंने कहा कि जिन कम्पनी उर्वरक प्रतिनिधि द्वारा या थोक उर्वरक विक्रेता द्वारा अक्रियाशील एवं आईएफएमएस पोर्टल पर उर्वरक विक्रय लाईसेन्स अपटेड नही है को उर्वरक की आपूर्ति की जाती है तो सम्बन्धित के विरूद्व उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 एवं उर्वरक परिसंचलन आदेश 1973 में दिये गये प्राविधानों के तहत व आवश्यक वस्तु अधिनियम की धारा 3/7 के तहत एफआईआर करा दी जायेगी। बैठक में उपस्थित आईपीएल उर्वरक प्रतिनिधि को निर्देश दिये गये कि अक्रियाशील व क्रियाशील उर्वरक विक्रय लाईसेन्सों को डीएक्टीवेट व एक्टीवेट करने की कार्यवाही की जाये।

तहसीलों में लगेंगे विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर

विधिक जागरूकता शिविर में प्रतिभाग कर प्राप्त करें योजनाओं की जानकारी

अलीगढ़। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव एवं अपर जिला जज नितिन श्रीवास्तव ने यह जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार जिले की सभी तहसीलों में विभिन्न तिथियों में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा। विधिक साक्षरता शिविर में महिलाओं के प्रति होने वाले उत्पीडन (पोक्सो एक्ट), एडीआर तंत्र, वाणिज्यिक विवाद, मीडिएशन, लीगल एण्ड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के साथ ही स्थाई लोक अदालत, उत्तर प्रदेश बाल सेवा योजना, टीकाकरण के संबंध में जानकारी प्रदान की जाएगी। प्राधिकरण सचिव ने बताया कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 08 अप्रैल को तहसील कोल एवं इगलास, 09 अप्रैल को तहसील खैर एवं कोल, 10 अप्रैल को तहसील गभाना, 23 अप्रैल को तहसील इगलास एवं खैर, 24 अप्रैल को तहसील कोल एवं 25 अप्रैल को तहसील गभाना में तहसील पदाधिकारियों, तहसील बार पदाधिकारियों एवं पराविधिक स्वयंसेवकों द्वारा विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शिविर में सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं, तहसील स्तर पर जारी शासकीय योजनाओं, तहसील स्तर पर संचालित योजनाओं एवं विधिक सेवा कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने समस्त नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि वह इस विधिक जागरूकता शिविर में अधिकाधिक संख्या में प्रतिभाग कर अपने विधिक अधिकारों के प्रति जागरूक हों।

जिलाधिकारी ने विकास भवन का किया निरीक्षण

अलीगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन द्वारा विकास भवन स्थित विभन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया गया। वह शुक्रवार को विकास भवन में आयोजित बीआरपी के लिए आवेदित अभ्यर्थियों के साक्षात्कार की गुणवत्ता जांचने पहुँचे थे। उन्होंने विकास भवन परिसर की साफ-सफाई व्यवस्था पर संतोष प्रकट करते हुए कहा कि साफ-सुथरे वातावरण में कार्य करने से कार्मिकों की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। इस दौरान उन्होंने प्रथम एवं द्वितीय तल पर स्थापित विभिन्न कार्यालयों यथा- सूचना, बाल विकास एवं पुष्टाहार, पशुपालन, पंचायतीराज, ग्राम्य विकास, एनआरएलएम को भी देखा। इस दौरान सीडीओ, एडीएम न्यायिक, डीडीओ, पीडी उपस्थित रहे।

गगन कॉलेज में 09 अप्रैल को लगेगा वृहद रोजगार मेला

अलीगढ़। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, मॉडल कैरियर सेन्टर, राजकीय आईटीआई एवं गगन कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टैक्नोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में 09 अप्रैल को प्रातः 10 बजे से वृहद रोजगार मेले का आयोजन आगरा रोड स्थित गगन कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टैक्नोलॉजी में किया जा रहा है। मेले में 30 कम्पनियों द्वारा प्रतिभाग कर लगभग 2700 रिक्त पदों पर चयन किया जायेगा। जिला सेवायोजन अधिकारी ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि रोजगार मेले में प्रणव विकास इण्डिया प्रा0 लि0 फरीदाबाद, मानसी गंगा बिल्डर्स एण्ड इंजी अलीगढ़, एनआईआईटी दिल्ली, विजन इण्डिया सर्विस नोयडा, टाटा स्ट्राईव स्किल डवलपमेंट सेंटर अलीगढ़, पोस्टेरिटी प्रा0लि0 नोयडा, ईएफएस प्रा0 लि0 सुड़ियाल एवं अन्य के द्वारा सिक्योरिटी सर्विस, मार्केटिंग, अकाउण्टेन्ट, प्रोडक्शन एसोसिएट, कम्प्यूटर आपरेटर, सेल्स, वेलनेस एडवाईजर, सुपरवाईजर, स्टोर इंचार्ज, पैकिंग इंचार्ज, टेलीकालर के पदों पर हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक, परास्नातक, आईटीआई, डिप्लोमा, बीटैक, बीबीए, बीसीए, एमबीए उत्तीर्ण अभ्यर्थियों का चयन किया जायेगा।

उत्तर मध्य रेलवे

रजिस्ट्री सं. डी.एल.-33004/99 REGD. No. D.L.-33004/99

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

सी.जी.–यू.पी.–अ.–01042025–262153

CG-UP-E-01042025-262153

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II–खण्ड 3–उप–खण्ड (ii)

PART II - Section 3 - Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1515] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 29, 2025/चैत्र 8, 1947

No. 1515] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 29, 2025/CHAITRA 8, 1947

रेल मंत्रालय

(उत्तर मध्य रेलवे)

अधिसूचना

प्रयागराज, 20 मार्च, 2025

का.आ. 1533(अ).–केन्द्रीय सरकार रेल अधिनियम, 1989 (1989 का 24) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 20क की उप–धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने के पश्चात की लोक प्रयोजन के लिए, ऐसी भूमि, (जिसका संक्षिप्त विवरण इस अधिसूचना, से उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट किया गया है), मेसर्स श्री सीमेंट नार्थ प्राइवेट लिमिटेड के लिए उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज डिवीजन के जवाहरपुर थर्मल पावर प्लांट (जेटीपीपी), एटा के आर एंड डी यार्ड और सिंगपुर लोया क्रासिंग स्टेशन के बीच गति शक्ति मल्टी माडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) का विकास, एटा, उत्तर प्रदेश तक प्रस्तावित रैखिक कनेक्टिविटी के निष्पादन के लिए अपेक्षित है, ऐसी भूमि का अर्जन करने के अपने आशय की घोषणा करती है।

उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से तीस दिवस की अवधि के भीतर उक्त अधिनियम की धारा 20 घ की उप–धारा (1) के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजन के लिए ऐसी भूमि के अर्जन और उपयोग के सम्बन्ध में आक्षेप कर सकेगा।

पूर्ववर्ती पैरा में विनिर्दिष्ट प्रत्येक आक्षेप सक्षम प्राधिकारी अर्थात, उप जिलाधिकारी, एटा जिला एटा उत्तर प्रदेश को लिखित में किया जाएगा और उसमें उसके आधार निर्दिष्ट किए जाएंगे तथा ऐसा सक्षम प्राधिकारी, आक्षेपकर्ता को या तो व्यक्तिगत रूप से या विधि व्यवसायी के माध्यम से सुनवाई का अवसर प्रदान करेगा और ऐसे सभी आक्षेपों की सुनवाई करने तथा ऐसी अतिरिक्त जांच, यदि कोई हो, करने के पश्चात, जो सक्षम प्राधिकारी आवश्यक समझें, आदेश द्वारा आक्षेपों को या तो अनुज्ञात या अननुज्ञात कर सकेगा।

अनुसूची

उत्तर प्रदेश राज्य के ऐटा जिले में विशेष रेल परियोजना अर्थात् मेसर्स श्री सीमेंट नार्थ प्राइवेट लिमिटेड के लिए उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज डिवीजन के जवाहरपुर थर्मल पावर प्लांट (जेटीपीपी) एटा के आर एंड डी यार्ड और सिंगपुर लोया क्रासिंग स्टेशन के बीच गति शक्ति मल्टी माडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) का विकास एटा उत्तर प्रदेश तक प्रस्तावित रैखिक कनेक्टिविटी के लिए अर्जित की जाने वाली भूमि का संरचना सहित या उसके रहित विवरण।

क्र. सं.	नाम ग्राम	तहसील	खसरा नंबर	कुल रकबा (वर्ग मीटर में)	अधिग्रहण योग्य रकबा (वर्ग मीटर में)
1	निगोह हसनपुर	एटा	174	8330	1203
2	निगोह हसनपुर	एटा	175	890	379
3	निगोह हसनपुर	एटा	165	11530	3687
4	निगोह हसनपुर	एटा	160	690	94
5	निगोह हसनपुर	एटा	166	2830	1365
6	निगोह हसनपुर	एटा	159	890	711
7	निगोह हसनपुर	एटा	146	41620	814
8	निगोह हसनपुर	एटा	158	2830	1588
9	निगोह हसनपुर	एटा	156	12130	668
10	निगोह हसनपुर	एटा	239	5350	333
11	निगोह हसनपुर	एटा	240	45420	378
12	निगोह हसनपुर	एटा	253	2470	745
13	निगोह हसनपुर	एटा	254	5350	2616
14	निगोह हसनपुर	एटा	256	16670	3932
15	निगोह हसनपुर	एटा	260	2430	412
16	निगोह हसनपुर	एटा	261	14320	2525
17	निगोह हसनपुर	एटा	262	5950	703
18	निगोह हसनपुर	एटा	263	5870	936
19	निगोह हसनपुर	एटा	266	158	102
20	निगोह हसनपुर	एटा	267	1130	1209
21	निगोह हसनपुर	एटा	952	8620	517
22	निगोह हसनपुर	एटा	967	1090	120
23	निगोह हसनपुर	एटा	968	13520	4876
24	निगोह हसनपुर	एटा	969	12910	491
25	निगोह हसनपुर	एटा	972	13920	3813
26	निगोह हसनपुर	एटा	973	18540	5201
				255458	39418

[फा. सं. NCR-PRYJ0OPTG(MISC)/45/2024 दिनांक 27.07.2024]

605/25 (C) हिमांसु वडोनी, मंडल रेल प्रबंधक

@CPRONCR North central railways cproncrly CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

भक्तों ने वैरावट धाम मंदिर पहुंचकर माता को चुनरी भेंटकर विशाल झंडा शिखर पर चढ़ाया

जनप्रतिनिधियों ने प्राचीन मंदिर के विकास में नही दिखाई कोई दिलचस्पी, दूर-दूर से आते हैं यहां श्रद्धालु, माता के आर्शीवाद से होतीं हैं पूरी मनोकामनाएं

ललितपुर। चैत्र नवरात्रि के पांचे को नगर के श्री राधा कृष्ण साहू समाज मंदिर से माता भक्तों ने श्री श्री 1008 श्री वैरावट धाम पर मातारानी को चुनरी भेंटकर विशाल झंडा शिखर पर चढ़ाकर प्रसाद वितरित किया गया। गौरतलब है कि श्री श्री 1008 श्री वैरावट धाम मंदिर हजारों साल पुराना मंदिर है, यहाँ की मानता है कि हर साल नव दुर्गा के दौरान नौ दिनों भक्तो का माँ से आशीर्वाद लेने के लिये हजारों श्रद्धालुओं की लाइन लगी रहती है। जिसके क्रम में चैत्र नवरात्रि के पांचवें दिन नगर के गांधी नगर नई बस्ती स्थित श्रीराधा कृष्ण साहू समाज मंदिर से माता भक्तों ने श्री श्री 1008 श्री वैरावट धाम पर मातारानी को चुनरी भेंटकर विशाल झंडा शिखर पर चढ़ाया और प्रसाद वितरित किया गया। बता दे कि मंदिर का इतिहास महाभारत के इर्द गिर्द घूमता है। माना जाता है कि महाभारत के युग में श्रीवैरावट धाम में पांडवों ने यहां अज्ञातवास गुजारा था। इसके साथ ही अपनी आस्था प्रकट करते हुये उन्होनें यहां वैरावट माता को अपनी कुलदेवी मानकर मंदिर का निर्माण कराया था। तब से लेकर अब तक यहां श्रद्धालुओं का प्रतिदिन तांता लगा रहता है। मान्यता है कि यहां आने पर लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। लेकिन यह क्षेत्र आज भी उपेक्षा का शिकार है। यहां आने जाने के लिए कोई पक्का सम्पर्क मार्ग नही है। खेतों से होकर पंगडंडी के सहारे ही मंदिर में पहुंचा जाता है। बाकी दिनों तो श्रद्धालु आसानी से धाम में पहुंचते हैं, किन्तु बरसात के दिनों में खेतों से होकर गुजरने में उन्हे भारी असुविधा होती हैं। अपनी मनोकामना पूर्ण करने को दूर दूर से यहां लोग आते हैं। इतना ही नही वैरावट धाम में विधुत व्यवस्था का कोई इंतजाम नही हैं। इतने जनप्रतिनिधि आये और गये, लेकिन किसी ने प्राचीन मंदिर के लिए कुछ भी नही किया। चुनाव के समय कई जनप्रतिनिधि यहां आकर कई वायदे करते हैं, किन्तु चुनाव जीतने के बाद उनके वायदे ठण्डे बस्ते में चले जाते है। बताते चलें कि अभी तक जो भी व्यक्ति श्री वैरावट माता मंदिर धाम से जुडा है, उसने ही मंदिर के विकास के लिए अपनी सामर्थ के अनुसार विकास किया है। पहले की अपेक्षा अब मंदिर में जो भी है विकास दिखता है। लेकिन मंदिर के लिए कई प्रकार का विकास अभी बाकी है। जिसमें मुख्य संपर्क मार्ग, विघुत व्यवस्था प्रमुख है। नवरात्रि के मौको पर श्रद्धालुजन यहां आकर कन्याभोज कराते हैं, और मंदिर में दान पुण्य भी करते है। रविवार को गांधीनगर के प्रमुख धर्मालंबियों ने श्री वैरावट धाम पहुंचकर भंडारा आयोजित कराया। सर्वप्रथम उन्होनें माता को प्रसाद अर्पित कर परिवार मे सुख समृद्धि की कामना की। वहीं मंदिर के विकास के लिए विचार विमर्श हुआ। इस दौरान प्रवीण दुबे, राहुल चौबे, हरिकिशन साहू, जुगराज पप्पू साहू, सुरेंद्र रिंकू साहू, पप्पू साहू टोडे वाले, रामकिशोर बिरधा वाले, राजेन्द्र सिंह सिसोदिया, विनय जोशी टेलर, पत्रकार देवेंद्र साहू, कपूर चंद्र साहू पाय वाले, पप्पू साहू जाखलौन वाले, बालकिशन साहू, भोगीराम साहू, सौरभ साहू, अशोक साहू प्रबधंक, छोटेलाल साहू जिला टैक्सी एसोसिएशन अध्यक्ष, शंकरलाल शर्मा, दीपांशु, लकी, राजा, हर्ष, आंशिक, मोनिका, स्वति, बंसिका, पूजा साहू, प्रताप साहू, शिवराज साहू गदयाना, मयंक साहू, विवेक तिवारी, सुनील कुशवाहा, इमरत साहू, अभिषेक साहू, विशाल यादव, उमेश यादव तालाबपुरा सहित समस्त मोहल्लेवासी मौजूद रहे।

वक्फ संशोधन बिल को लेकर पुलिस अलर्ट मोड पर, देर रात एसपी ने गूगल मीटिंग कर अधीनस्थों को दिये निर्देश

ललितपुर। पुलिस अधीक्षक मो.मुश्ताक ने गूगल मीट के माध्यम से जनपद के समस्त राजपत्रित अधिकारियों, थाना, शाखा व चौकी प्रभारियों के साथ अपराध एवं कानून-व्यवस्था के सम्बन्ध में मीटिंग कर, वक्फ बिल, जुम्मे की नमाज तथा उर्स मेला के सम्बन्ध में संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। एसपी ने कहा कि समस्त क्षेत्राधिकारी, थाना, चौकी प्रभारियों को अपने-अपने क्षेत्र में वक्फ बिल के दृष्टिगत जनपद में विरोध प्रदर्शन की सम्भावना के दृष्टिगत संवेदनशील क्षेत्रों को चिन्हित कर आवश्यकतानुसार समुचित पुलिसबल सुरक्षा प्रबन्ध किए जाने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर विशेष सुमदाय के विभिन्न संगठनों, पदाधिकारियों द्वारा किए जाने वाले विरोध प्रदर्शन, अफवाहों एवं भ्रामक प्रचार-प्रसार रोकने के दृष्टिगत उनके धर्म गुरुओं के साथ सकारात्मक विचार विमर्श हेतु गोष्ठी करने हेतु निर्देशित किया। वक्फ बिल/जुम्मे की नमाज तथा उर्स मेला के दृष्टिगत सुरक्षा, शांति व कानून-व्यवस्था बनाये रखने हेतु, अराजकतत्वों की सतत् रूप से कड़ी निगरानी रखने तथा उनके विरुद्ध आवश्यक निरोधात्मक कार्यवाही करने आदि के सम्बंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। समस्त क्षेत्राधिकारियों, थाना प्रभारियों को मिश्रित एवं भीड़-भाड़ आबादी वाले क्षेत्रों में प्रतिदिन पैदल गस्त करने तथा पैदल गस्त की फोटों ऑनलाइन पोर्टल पर समय से फीड करने के लिए निर्देशित किया।

एसपी ने पैदल भ्रमण कर देखी व्यवस्थाएं

पुलिस अधीक्षक मो.मुश्ताक ने जुमे की नमाज के दृष्टिगत थाना कोतवाली क्षेत्रातंर्गत शहर क्षेत्र में भ्रमण कर सुरक्षा-व्यवस्था का जायजा लेकर ड्यूटी पर तैनात पुलिस फोर्स को चेक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। जुमे की नमाज के दृष्टिगत जनपदीय पुलिस द्वारा व्यापक सुरक्षा के प्रबंध किये गये एवं मिश्रित आबादी वाले क्षेत्र में ड्रॉन कैमरे, सीसीटीवी कैमरे आदि से सतत् निगरानी की गयी।

उर्स मेला देखने गये युवक की बाइक चोरी

ललितपुर। मोहल्ला गोविन्दनगर रावतयाना निवासी अमित पुत्र सुरपाल सिंह ने थाना पुलिस को शिकायती पत्र देते हुए बताया है कि बीते गुरूवार की रात 11.30 बजे वह सदनशाह दरगाह पर उर्स देखने के लिये आया हुआ था। यहां उसने अपनी मोटर साइकिल संख्या यू.पी.94 ए.ई. 2817 गिन्नौट बाग की पार्किंग में खड़ी कर दी थी। वह जब कुछ ही समय बाद वापिस आया तो देखा कि उसकी मोटरसाईकिल उक्त जगह पर नही है। आस पास के लोगों से काफी पूछताछ व खोजबीन की, लेकिन कहीं नही मिली। पीड़ित ने कोतवाली पुलिस से मामला दर्ज करने की गुहार लगायी है।

अग्निकांड से बचाव को लेकर एडवाइजरी जारी

ललितपुर। पराली जलाने से बचें किसान, तेजी से बढ़ रही गर्मी के दृष्टिगत संभावित अग्निकाण्डों से बचाव को लेकर जिलाधिकारी/अध्यक्ष जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण अक्षय त्रिपाठी ने जनमानस से बचाव हेतु अपील करते हुए सचेत किया कि गर्मी बढने के साथ ही अग्निकाण्ड की घटनाएं भी प्रारम्भ हो गई हैं। गर्मी के दिनों में जब तेज पछुआ हवा चलती है तो गांवों में अग्निकांड की घटनाएं बड़े पैमाने पर घटित होती हैं जिसके फलस्वरूप हमारे घर, खेत, खलिहान एवं जान-माल को भारी क्षति पहुंचती है। बहुत छोटी-छोटी सावधानियां अपना कर हम अग्निकांड की घटनाओं को रोक सकते हैं। इस राम्बन्ध में बताया कि रसोई घर यदि फूस का हो तो उसकी दीवाल पर मिट्टी का लेप अवश्य लगा दें। रसोई घर की छत ऊंची रखी जाए। आग बुझाने के लिए घर में बोरे में भरकर बालू अथवा मिट्टी तथा दो बाल्टी पानी अवश्य रखें। हवन आदि का काम सुबह नौ बजे से पहले सम्पन्न कर लें। शार्ट सर्किट की आग से बचने के लिए बिजली बायरिंग की समय पर मरम्मत करा लें। मवेशियों को आग से बचाने के लिए मवेशी घर के पास पर्याप्त मात्रा में पानी का इंतजाम रखें एवं उनकी निगरानी अवश्य करते रहें। गर्मियों में दिन का खाना 09 बजे सुबह से पूर्व बना लें तथा रात का खाना शाम 06 बजे के बाद बनाएं। बिजली के ढीले तारों से निकली चिंगारी भी आग लगने का कारण बन जाती है। इसलिए जहां कहीं भी बीले तार दिखें उसकी सूचना बिना देर किए बिजली विभाग को दें। आग लगने पर सर्व प्रथम समुदाय के सहयोग से आग बुझाने का प्रयास करें। आवश्यकता होने पर आग बुझाने के लिए फायर बिग्रेड नं. 101/100 एवं प्रशासन को तुरंत सूचित करें। अगर कपड़ों में आग लगे तो जमीन पर लेटकर या लुढ़क कर उसे बुझाने का प्रयास करें। खुद के साथ अपने पड़ौसियों को भी सतर्क करें। एडीएम अंकुर श्रीवास्तव ने जनसामान्य से कटनी के बाद खेत में छोड़े इंदलों में आग नहीं लगाएं। जलती हुई माचिस की तीली अथवा अधजली बीड़ी एवं सिगरेट पीकर इधर-उधर न फेकें। खाना सनाते समय ढीले-ढाले और पॉलिस्टर के कपड़े न पहनें। हमेशा सूती कपड़े पहनें। माचिस सा लाईटर को बच्चों से दूर रखें। सार्वजनिक स्थानों, ट्रेनों एवं बसों आदि में ज्वलनशील पदार्थ लेकर न चलें। अपने-अपने खेतों में सर्गे ट्रान्सफार्मर के आसपास लगभग 10 वाई 10 फिट तक सफाई व्यवस्था कर दे, ताकि किसी प्रकार से इलेक्ट्रिसिटी फॉल्ट होने से शियारी के सारी से निकलने वाली चिंगारी से आपकी खड़ी फसल को कोई नुकसान न हो।

वक्फ बिल संशोधन से मुस्लिम महिलाओं को मिला आर्थिक एवं सामाजिक न्याय, राजनैतिक भागीदारी में भी मिलेगा अधिकार : दिनेश भारद्वाज

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ नेता लोकतंत्र सैनानी वरिष्ठ अधिवक्ता दिनेश भारद्वाज ने वक्फ बोर्ड बिल संशोधन का जोरदार स्वागत किया हैं। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए केंद्र की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अगुवाई वाली भाजपा सरकार की मुक्त कंठ से प्रशंसा और सराहना करते हुए इस ऐतिहासिक निर्णय पर भारत सरकार का साधुवाद और आभार जताया है। उन्होंने कहा है कि वक्फ बोर्ड की आड़ में मुस्लिम महिलाओं का शोषण कई प्रकार से किया जा रहा था, फिर चाहे वो तीन तलाक हो या फिर विभिन्न प्रकार की अन्य भ्रांतियां हों। अब इस बिल में संशोधन से मुस्लिम महिलाओं को उनका आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि पूर्व में जहां इन महिलाओं को पिता की संपत्ति से वंचित रखा जाता रहा, वहीं भविष्य में अब पिता की संपत्तियों पर भी मुस्लिम महिलाओं का अधिकार रहेगा। उन्होंने मुस्लिम समुदाय को संबोधित अपने उद्बोधन में कहा कि वक्फ बोर्ड संशोधन बिल से अल्पसंख्यक समुदाय को डरने की आवश्यकता नहीं। यह

संशोधन अल्पसंख्यकों के कल्याण में नये कीर्तिमान स्थापित करेगा और विकासशील समाज के निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा। श्री भारद्वाज मुस्लिम समाज के प्रबुद्ध जनों के साथ आयोजित एक गोष्ठी में बोल रहे थे। उन्होंने मुस्लिम समाज के धर्मगुरुओं के साथ आयोजित गोष्ठी में कहा कि वक्फ संशोधन बिल के विरोध में आंदोलन छद्म धर्मनिरपेक्ष दलों की राजनीतिक रोटियां सेंकने की दुर्भावना से प्रेरित और सामाजिक समरसता को छिन्न-भिन्न करने की ग्रसित मानसिकता का ज्वलंत प्रमाण है, जिसे अल्पसंख्यक समाज अब पूरी तरह से समझ चुका है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की नीतियों और कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित होकर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

मऊ रोड़ पर चला निगम का अतिक्रमण हटाओ अभियान, सीमा के भीतर लगे रोजगार भी उजाड़े, दिखी निरंकुशता

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। नगरनिगम का अमला इन दिनों अतिक्रमण के नाम पर छोटे-बड़े व्यवसायियों को ठिकाने लगाने में जुटा हुआ है। निगम अधिकारियों की निरंकुशता से व्यवसाई सड़क पर आता जा रहा है। अधिकारियों ने शुक्रवार को खन्दारी स्थित मऊ रोड़ पर अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस अभियान के तहत नालों तक सड़कों को कब्जा मुक्त कराया गया। इस दौरान निगम के निरंकुश अधिकारियों ने नाले के अंदर अपनी सीमा में बने प्रतिष्ठानों को भी उजाड़ दिया, जिससे स्थानीय दुकानदारों में आक्रोश व्याप्त है। उक्त स्थान पर पण्डित जी ढाबा नाम से एक शुद्ध शाकाहारी ढाबा संचालित है , निगम के निरंकुश अमले ने जिसे तहस-नहस कर दिया। पीड़ित ढाबा संचालक अमित त्रिपाठी ने हमारे संवाददाता को बताया कि ढाबा पर कोई अतिक्रमण नहीं था, नाले की सीमा के अंदर संचालित हो रहे ढाबे को निगम के अमले ने बुल्डोजर चलाकर भारी नुकसान पहुंचा दिया है, जो अधिकारियों की निरंकुशता का ज्वलंत उदाहरण है। नगर निगम की इस कार्यवाही में अधिकारियों की निरंकुशता और संवेदनहीनता साफ़ देखी जा रही है। स्थानीय दुकानदारों में निगम अधिकारियों के खिलाफ आक्रोश साफ़ देखा जा रहा है। उन्होंने नगरा युक्त अंकित खण्डेलवाल से मुलाकात कर असंवेदनशील अधिकारियों की शिकायत मुख्यमंत्री पोर्टल पर दर्ज कराने की बात कही।

सैम स्कूल यूनिफार्म एंड स्टेशनरी की जीएसटी की जांच की मांग

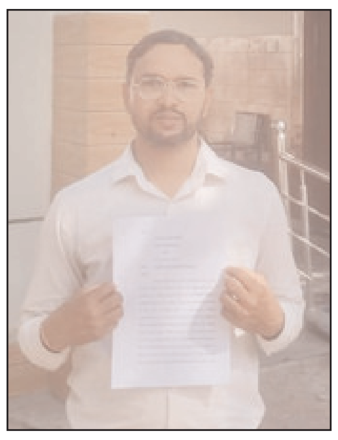

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। कारगिल पेट्रोल पंप चौराहे पर स्थित सैम स्कूल एवं स्टेशनरी द्वारा प्रतिदिन लाखों की बिक्री की जा रही है और ग्राहकों से भुगतान ऑनलाइन अपने निजी अकाउंट में कराया जाता है । इनका बैंक अकाउंट फर्म के नाम से रजिस्टर्ड नहीं है । प्रतिदिन लाखों की बिक्री होती है तो फर्म के अकाउंट यानी बिजनेस अकाउंट में ग्राहकों से भुगतान कराया जाना चाहिए। वायु विहार मार्ग पथौली निवासी विजयपाल नरवार ने मुख्यमंत्री के नाम प्रार्थना पत्र मंडलायुक्त आगरा को सौंपा गया जिसमें उन्होंने सैम स्कूल यूनिफार्म एंड स्टेशनरी की जीएसटी चोरी की जांच गहनता से कराकर कार्यवाही की मांग की है। सैम स्कूल यूनिफार्म एंड स्टेशनरी की दुकान से विभिन्न स्कूलों की यूनिफार्म एवं जूते मोजे आदि की बिक्री की जाती है। कारगिल क्षेत्र में ये उपरोक्त सामग्री का बहुत बड़ा सप्लायर है। यहां महंगी और फिक्स रेट पर सामान मिलता है। जूते आदि भी रेट टू रेट मिलते हैं जबकि बड़ी बड़ी ब्रांडेड कंपनियों के जूते बड़े शोरूम पर भी रेट टू रेट नहीं मिलते। जीएसटी चोरी का यह मामला बहुत गंभीर है जिसकी जांच होनी चाहिए।

निजी स्कूलों की शिकायतों का जिलाधिकारी ने लिया संज्ञान, विक्रेताओं की मनमानी पर लगाई लगाम

अभिभावकों, निजी स्कूल संचालकों, प्रधानाचार्यों, व्यापार मंडल व बेसिक व माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक संपन्न

जिलाधिकारी महोदय ने निजी स्कूल संचालकों, स्टेशनरी विक्रेताओं को दिए कड़े निर्देश, खरीद के बाद अभिभावकों को खरीदी गई सभी बुक्स व स्टेशनरी का जीएसटी नंबर युक्त बिल की देंगे स्लिप, सिलेबस से अलग अनावश्यक बुक्स तथा स्टेशनरी न जोड़ें, न वसूलें मनमानी कीमत, सप्लीमेंट्री मैटेरियल तथा ज्योमेट्री बॉक्स, ए-4 साइज सिंगल लाइन कॉपी, तथा अन्य सामान की खरीद हेतु अभिभावक, खुले बाजार में किसी भी दुकान से खरीद को हैं स्वतंत्र

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। जिलाधिकारी अरविंद मल्लप्पा बंगारी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में अभिभावकों, निजी स्कूलों के प्रधानाचार्यों, व्यापार मंडल व बेसिक व माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ एक बैठक आहूत की गई। बैठक में जिलाधिकारी महोदय द्वारा निजी स्कूल संचालकों, स्टेशनरी विक्रेताओं के विरुद्ध विभिन्न सामाजिक संगठनों, अभिभावक संघ आदि द्वारा निरंतर प्राप्त हो रहीं शिकायतों का संज्ञान लेते हुए सर्व प्रथम जिलाधिकारी ने अभिभावकों के पक्ष व शिकायतों की जानकारी ली, जिसमें बताया गया कि निजी स्कूल संचालकों द्वारा संबंधित स्कूल से अधिकृत बुक्स-स्टेशनरी विक्रेताओं, दुकानदारों से ही पुस्तकें, स्टेशनरी, यूनिफॉर्म आदि की खरीद कराई जा रही है तथा अनावश्यक रूप से तय सिलेबस से अलग पुस्तकें, सप्लीमेंट्री मैटेरियल के रूप में अनावश्यक स्टेशनरी, ज्योमेट्री बॉक्स, ए-4 साइज सिंगल लाइन कॉपी आदि विभिन्न सामान खरीद हेतु विवश किया जा रहा है, स्टेशनरी दुकानदारों द्वारा स्टेशनरी तथा किताब खरीद के बाद अभिभावकों को खरीद स्लिप तथा जीएसटी बिल भी अभिभावकों को नहीं प्रदान किया जा रहा, पुस्तक-स्टेशनरी विक्रेताओं द्वारा अभिभावकों को किताबों का पूरा सैट ही खरीदने को मजबूर किया जा रहा है, फुटकर बुक्स नहीं दी जा रहीं। बैठक में जिलाधिकारी महोदय ने स्कूल संचालकों, प्रिंसिपल तथा स्टेशनरी विक्रेताओं के पक्ष की भी

विस्तार से जानकारी ली। बैठक में जिलाधिकारी महोदय ने निजी स्कूल संचालकों, स्टेशनरी विक्रेताओं कड़े निर्देश देते हुए कहा कि सभी बुक्स-स्टेशनरी विक्रेता, खरीद के बाद अभिभावकों को खरीदी गईं सभी बुक्स व स्टेशनरी का जीएसटी नंबर युक्त बिल की स्लिप देंगे, स्कूल संचालक सिलेबस से अलग अनावश्यक बुक्स तथा स्टेशनरी न जोड़ें, दुकानदारों द्वारा मनमानी कीमत न वसूली जाए,सप्लीमेंट्री मैटेरियल यथा ज्योमेट्री बॉक्स, ए-4 साइज सिंगल लाइन कॉपी, तथा अन्य सामान की खरीद हेतु अभिभावक, खुले बाजार में किसी भी दुकान से खरीद को स्वतंत्र हैं, स्कूल संचालकों तथा स्टेशनरी-विक्रेताओं द्वारा स्टेशनरी को अनिवार्य रूप से अभिभावकों को खरीद हेतु दबाव नहीं बनाया जाएगा। जिलाधिकारी ने निजी स्कूल संचालकों व स्टेशनरी दुकानदारों को स्पष्ट दिशा निर्देश देते हुए कहा कि शिकायत मिलने व उक्त निर्देशों का अनुपालन न करने बालों की जांच करा कठोर विधिक कार्यवाही के साथ संबंधित स्कूलों की मान्यता समाप्ति की संस्तुति के साथ प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में जिलाधिकारी महोदय ने कहा कि स्कूल संचालकों द्वारा अननेसेसरी बुक्स, स्टेशनरी तथा अन्य सामान स्कूल से अधिकृत दुकान से ही खरीद कराना, स्कूल के मोनोग्राम लगी स्टेशनरी, सिलेबस में मनमाने ढंग से अनावश्यक बुक्स तथा स्टेशनरी जोड़ना आदि यूपी सेल्फाइनेंस्ड इंडिपेंडेंट स्कूल (फ़ी रेगुलेशन) एक्ट -2018 के अंतर्गत नियम विरुद्ध व दंडनीय है, ऐसे निजी स्कूल व बुक्स-स्टेशनरी विक्रेताओं को चिह्नित कर विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में जिला विद्यालय निरीक्षक श्री चंद्रशेखर, सह- जिला विद्यालय निरीक्षक विश्व प्रताप सिंह,नगर शिक्षा अधिकारी श्री सुमित कुमार, व्यापार मंडल के श्री जय पुरुसनानी, दीपक शरीन, स्कूल संचालक व प्रधानाचार्य, बुक्स-स्टेशनरी विक्रेताओं के प्रतिनिधि व अभिभावक मौजूद रहे।

गांव में 23 लाख की चोरी : चोर अपने साथ ले गए लाइसेंसी रायफल भी, डॉग स्कायर मौके पर

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। चोरों ने एक घर से आठ लाख कैश और 15 लाख की ज्वेलरी चोरी की घटना को अंजाम दे डाला। चोरी की सूचना पर डॉग स्कवायड और फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंच चुकी है। पूरा गांव इकटठा हो गया है। चोर ज्वैलरी और कैश के साथ लाइसेंसी रायफल भी ले गए हैं। घटना कागारौल के मसेल्या गांव की है। सुभाष चाहर अपने पिता के साथ इसी गांव में रहते हैं। पिता दंगल देखने के लिए गांव से बाहर गए हुए थे। घर में सुभाष और उनकी पत्नी थे। रात में 4 5 बदमाश घर में घुसे। सुभाष और उनकी पत्नी को कमरे में बंद किया। इसके बाद पूरा घर खंगाला। अलमारियां तोड़ कर उसके अंदर रखा 5.70 लाख रुपये कैश और लगभग 15 20 लाख की ज्वैलरी ले गए हैं। जिसमें 800 900 ग्राम चांदी और 15 तोले से ज्यादा सोना है।

आलू बेचने पर आया था पैसा

सुभाष ने पुलिस को बताया कि हाल में ही आलू बेचा था। जिससे पैसा आया था। इसलिए कैश घर में रखा था। सुभाष के भाई चंद्रवीर चाहर ठेकेदार हैं। उन्होंने बताया कि उनका घर गांव से बाहर की तरफ है। घर में छोटा भाई सुभाष और उसकी पत्नी ही थे। घटना रात 12 से 2 बजे के बीच की है। घर में सीसीटीवी कैमरे नहीं हैं। चंद्रवीर का कहना है कि यह काम किसी जान पहचान वाले का है। उसे घर के अंदर के हर कमरे की जानकारी थी। अलमारियों से वही संदूक लेकर गए, जिनमें पैसा और ज्वैलरी थी। पैसा और ज्वैलरी निकालने के बाद संदूक, खाली बाक्स आदि खेतों में फेंक गए हैं। सुबह कुछ लोग गांव में टहलने निकले तो एक खेत में संदूक, कपड़े आदि पड़े मिले। उन्होंने तुरंत गांव में सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंच चुकी है। जांच की जा रही है। डाग स्क्वायर और फोरेंसिक टीम भी मौके पर है। तहरीर के बाद मुकदमा दर्ज हो चुका है।

भाजपा नेता सुग्रीव चौहान ने किया भदरौली के प्राचीन केला देवी मंदिर मेले का उद्घाटन

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। तहसील बाह के कस्बा भदरौली में आयोजित भदरौली वाली माता मंदिर के ऐतिहासिक भव्य मेले का मुख्य अतिथि के रूप में रहे सुग्रीव सिंह चौहान पूर्व ब्लाक प्रमुख ने अपने करकमलों से किया। इस अवसर पर उन्होंने विशाल संख्या में पधारे ग्रामीणों ने मेला कमेटी के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह मुखिया एवं समस्त पदाधिकारियों को मेले की दिल से शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन हमारी संस्कृति की धरोहर को जीवित रखने के साथ-साथ समाज को एक रहने का संदेश देते हैं। मेला कमेटी के समस्त पदाधिकारी का हृदय से आभार एवं धन्यवाद माननीय श्री सुग्रीव सिंह चौहान जी ने किया और साथ-साथ मिला के अंदर पुलिस प्रशासन की भरपूर व्यवस्था देखने को मिली।

फतेहाबाद से संवाददाता साजुद्दीन खान की रिपोर्ट

अंबाला में कंपनी का मैनेजर लापताः ग्राहक से मिलने के लिए स्कूटी से निकला था, आगरा का रहने वाला

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। हरियाणा के अंबाला में युवक के लापता होने का मामला सामने आया है। युवक कंपनी के काम से वीरवार दोपहर को निकला था। जिसके बाद वापस नहीं लौटा। जिसके बाद उसकी कंपनी के अन्य साथियों को चिंता हुई। साथियों ने आसपास खूब तलाश की, लेकिन कोई सफलता हासिल नहीं हुई। जिसके बाद वह देर रात अंबाला कैंट थाने पहुंचे और मुकदमा दर्ज कराया। अंबाला कैंट के आलू गोदाम रोड स्थित एक कंपनी के मदन ढिल्लो ने अपनी दर्ज कराई शिकायत में कहा है कि उसकी कंपनी में आगरा का रहने वाला मुकेश अस्थान काम करता है। जो वीरवार दोपहर से लापता हुआ है। अब उसकी तलाश में पुलिस जुट गई है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी खंगाल रही है।

मैनेजर पद था तैनात

मुकेश अस्थान आगरा का रहने वाला है। वह अंबाला कैंट के रानीबाग इलाके में किराए पर रहता है। वहीं, कंपनी में वह मैनेजर के पद पर तैनात था। वह वीरवार दोपहर करीब 2.30 दोपहर को अपनी स्कूटी पर सवार होकर कम्पनी से किसी ग्राहक के पास जाने के लिए निकला था। जिसके बाद वह वापस नहीं लौटा। इस पर कंपनी के साथियों को चिंता हुई। उन्होंने आस पास खूब तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं लग सका है।

लैपटॉप और बैग भी साथ

मदन ढिल्लो के अनुसार वह कंपनी से किसी ग्राहक को मिलने गया था। जिसके बाद से वह लापता है। उन्होंने बताया कि उसके पास कंपनी का महंगा लैपटाप भी है। जिस वजह से चिंता और बढ़ रही है। कहीं, किसी ने उसके साथ लूट की घटना तो नहीं कर दी इसको लेकर कंपनी के लोग परेशान हैं।

पुलिस कर रही तलाश

अंबाला कैंट थाने के एसएचओ अजैब सिंह के अनुसार पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। युवक की तलाश में जुट गए हैं। वो किस ग्राहक से मिलने गया था, इसको लेकर भी जांच जारी है। इसके साथ ही सीसीटीवी और मोबाइल सर्विलेंस की मदद से उसकी खोज की जा रही है। जल्द ही उसको बरामद कर लिया जाएगा।

थाना कागारोल क्षेत्र में विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। थाना कागारौल क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव नगला परमाल में शुक्रवार को एक विवाहिता की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। मृतका के परिजनों ने ससुराल पक्ष पर दहेज की मांग को लेकर हत्या का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि हत्या के बाद शव को जलाने की कोशिश की गई। मृतका की पहचान ममतेश के रूप में हुई है, जो मांगरौल जाट, अछनेरा निवासी कृष्ण मुरारी की पुत्री थी। ममतेश की शादी 4 दिसम्बर 2022 को नगला परमाल निवासी चंद्रवीर चाहर के साथ

हिन्दू रीति रिवाज से हुई थी। घटना की जानकारी मिलने पर मृतका के मायके पक्ष ने थाना कागारौल पहुंचकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया और न्याय की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि ससुराल वालों ने अतिरिक्त दहेज की मांग को लेकर ममतेश की हत्या कर दी और साक्ष्य मिटाने के लिए शव को जलाने का प्रयास किया। घटना के बाद से ससुराल पक्ष के सभी लोग घर से फरार हैं। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर अधजले शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है।

जुम्मे की नमाज को लेकर किया पैदल मार्च, चप्पे-चप्पे पर पेनी नज़र

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। पुलिस आयुक्त, जे. रविन्दर गौंड के निर्देशन में वक्फ संशोधन बिल व जुम्मे की नमाज़ के दृष्टिगत शांति एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने हेतु सहायक पुलिस आयुक्त, लोहामण्डी मयंक तिवारी द्वारा थाना लोहामण्डी क्षेत्रान्तर्गत संवेदनशील एवं मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों में पुलिस बल के साथ फ्लैग मार्च किया गया। इस दौरान क्षेत्र में सतर्क दृष्टि रखते हुए जनता से संवाद कर शांति, सौहार्द एवं सहयोग की अपील की गई। पुलिस बल पूरी मुस्तैदी व सतर्कता के साथ कानून-व्यवस्था बनाए रखने हेतु क्षेत्र में तैनात है।

डीसीपी वेस्ट ने किया थाना कागारौल का निरीक्षण

आगरा। पुलिस उपायुक्त पश्चिमी अतुल शर्मा द्वारा शुक्रवार को थाना कागारौल का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान थाने पर उपस्थित फरियादियों की समस्या सुन जनसुनवाई की गई व थाना परिसर, महिला हेल्प डेस्क, थाना कार्यालय आदि को चेक कर थाना अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्य की समीक्षा की गई एवं नवरात्रि त्योहार एवं वक्फ संशोधन बिल के दृष्टिगत सतर्कता बरतने हेतु अधिकारियों/कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए निरीक्षण के दौरान एसीपी सैया देवेश कुमार व थाना प्रभारी कागारौल समरेश सिंह मौजूद रहे।

वक्फ बिल पर समर्थन के बाद भाजपा अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष को जान से मारने की धमकी

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। वक्फ संशोधन बिल का समर्थन करने पर उत्तर प्रदेश अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशफाक सैफी को जान से मारने की धमकी मिल रही है। उन्होंने इस संबंध में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट डाली है। जिसमें उन्होंने कहा है कि वक्फ बिल संशोधन का समर्थन करने पर कुछ लोग मेरे खिलाफ अभद्र टिप्पणी कर रहे हैं...गाली गलौज कर रहे हैं। यहां तक कि मुझे जान से मारने की धमकियां दे रहे हैं। उन्होंने लिखा है कि कुछ मेरे मुस्लिम भाई अपना आपा खो बैठे हैं और इस तरह की हरकतों पर उतर आए हैं। बता दें कि वक्फ संशोधन बिल लोकसभा और राज्यसभा में पास हो गया है। अब इस पर सिर्फ राष्ट्रपति की मुहर लगना बाकी रह गया है। भाजपा नेता व उत्तर प्रदेश अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशफाक सैफी ने इस संशोधन बिल का समर्थन किया है। इस संबंध में उन्होंने अपने सोशल मीडिया एकाउंट पर पोस्ट अपलोड की थी, साथ ही मीडिया में भी बयान जारी किया था। उनका आरोप है कि इसी से मुस्लिम समाज के लोग उनके खिलाफ हो गए हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर जान से मारने की धमकी मिलने के संबंध में पोस्ट डाली है।

उन्होंने सोशल मीडिया पर ये लिखा

उन्होंने लिखा है कि मैं अपने देशवासियों से पूछना चाहता हूं आखिर मैंने ऐसा कौन सा अपराध कर दिया है, जिसके कारण मुझे और मेरे परिवार को गालियां दी जा रही हैं और मुझे डराया धमकाया जा रहा है। स्थिति यहां तक बिगड़ गई है कि मेरे बहनोई (गुन्नौर, संभल में रहते हैं) पर भी जानलेवा हमला कर दिया गया। अब मैं अपना फैसला आप सभी देशवासियों पर छोड़ता हूं। जय हिंद, जय भारत, मोदी जी जिंदाबाद, योगीजी जिंदाबाद, भारतीय जनता पार्टी जिंदाबाद।

क्या बोले

वक्फ संशोधन बिल का समर्थन करने पर वॉट्सऐप कॉल और सोशल मीडिया के जरिए मुझे डराया धयकाया जा रहा है। गुन्नौर संभल में मेरे बहनोई रहते हैं. उन पर जानलेवा हमला किया गया है।

अशफाक सैफी, पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश अल्पसंख्य आयोग

संपादकीय

देश में 13 नये अरबपति

अरबपतियों की संख्या के मामले में अब भारत तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। हुरुन ग्लोबल रिच लिस्ट के मुताबिक देश में 284 अरबपति हैं। इस साल इसमें देश में 13 नये अरबपति शामिल हुए। रिपोर्ट के अनुसार देश के 284 अरबपतियों की कुल संपत्ति 10 फीसद बढ़कर 98 लाख करोड़ रुपये या देश की जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद का एक-तिहाई हो गई है। भारत ने प्रत्येक अरबपति की औसत संपत्ति के मामले में चीन को पीछे छोड़ दिया। बीते साल 175 अरबपतियों की संपत्ति में वृद्धि हुई है, जबकि 109 की कुल नेटवर्थ में कमी आई या वह स्थिर है। गौतम अडाणी की संपत्ति में वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक इजाफा हुआ, जो तकरीबन एक लाख करोड़ रुपये बताई जा रही है। मुंबई में सबसे अधिक 90 अरबपति हैं। इनमें भी शीर्ष दस में पांच अरबपति देश के अरबपतियों की राजधानी यानी मुंबई से हैं। दो राजधानी दिल्ली से व बेंगलूर, पुणो व अहमदाबाद से एक-एक हैं। पूंजीपतियों की औसत दौलत 34,514 करोड़ रुपये व उम्र 68 साल आंकी गई है। सूची में 22 महिलाओं के नाम भी शामिल हैं। हालांकि अमेरिका की तुलना में भारत व चीन काफी पीछे हैं। जहां 870 अरबपति हैं। देश में अरबपतियों की दौलत सालाना 10 फीसद बढ़ी, जबकि अमेरिका में यह बढ़त 27 फीसद रही। दुनिया में कुल 3,442 अरबपति हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के शीर्ष पर पहुंचने व पारिवारिक कारोबार में तेजी आने का अप्रत्यक्ष लाभ कुछ हद तक सबसे पिछली कतार में बैठे वर्ग तक पहुंचने की भी उम्मीद की जाती है। ये कारोबार फार्मास्यूटिकल्स, एजुकेशन, टेक्नॉलाजी, फूड डिलीवरी आदि में विशेष तौर पर कारगर हैं। जाहिर तौर पर इन सबमें आम आदमी को रोजगार के अवसर बढ़ते ही जाने की संभावनाओं से मना नहीं किया जा सकता। हालांकि धन विभाजन तथा मुनाफाखोरी के दृष्टिकोण से इसकी आलोचना की जानी भी गलत नहीं है। क्योंकि अरबपतियों के बढ़ने के बावजूद दुनिया से गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी पर लगाम कसने के जमीनी स्तर के प्रयास नाममात्र हुए हैं। संयुक्त तौर पर एक ट्रिलियन डॉलर वाले सभी भारतीय अरबपतियों का दायित्व है कि वे अपने मुनाफे को बांटने के मार्ग प्रशस्त करने में उदारता दिखाएं ताकि संपन्नता से समूचा देश लाभान्वित हो सके।

अमेरिकी टैरिफ की मार, हम हैं कितने तैयार

(भूपेन्द्र गुप्ता-विनायक फीचर्स)

चुनाव जीतते समय ही अमेरिकन प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि वे रैसिप्रोकल टैरिफ उन देशों पर ठोकेंगे जिन्होंने हमारे देश पर भारी भरकम टैरिफ लगा रखे हैं। भारत को ट्रंप ने आगाह भी किया था लेकिन भारत के सही तरह नेगोशिएशन ना कर पाने के कारण अंततः 26 परसेंट रैसिप्रोकल टैरिफ ठोक दिया है । भारत पर इससे जबरदस्त प्रभाव पड़ने वाले हैं । हमारा अमरीका के लिए कुल एक्सपोर्ट लगभग 74 बिलियन डॉलर है इसमें लगभग 7 बिलियन डॉलर की कमी इन ताजा फैसलों से आ सकती है ।भारत की टेक्सटाइल इंडस्ट्री लगभग 9.6 बिलियन डॉलर, ऑटो इंडस्ट्री 2.6 बिलियन डॉलर, इलेक्ट्रॉनिक इंडस्ट्री लगभग 14 बिलियन , जनरल आईटम 8 बिलियन तथा आभूषण 9 बिलियन डालर का ट्रेड करते हैं। अमरीका एक मात्र देश है जहां हम निर्यात में ट्रेड सरप्लस देश हैं।लगभग 46 बिलियन डालर का हमारा ट्रेड सरप्लस है। दस फीसदी के बेसिक टेरिफ के अलावा अमरीका ने 26फीसदी अतिरिक्त रेसीप्रोकल यानि जैसे क़ो तैसा टैरिफ भारत पर लगा दिया है। ट्रंप सरकार के इस फैसले से भारत के सामने मिश्रित चुनौतियां खड़ी हो गई हैं । भारत के आभूषण एवं हीरा उद्योग,वस्त्र ,इलेक्ट्रानिक उद्योग ,तकनीकी सेवा तथा आटो सेक्टर के कठिनाई के दिन शुरू हो सकते हैं।इन उत्पादों को प्रति स्पर्धा में टिकने के लिये कीमतें घटाना होंगीं,खर्चे घटाना होंगे, जिसका सीधा असर नौकरियों पर पड़ेगा। मांग घटने से उत्पादन घटाना होगा अन्यथा नये बाजार खोजने होंगे या देश के अंदर ही खपत बढ़ाने के उपाय करने होंगे। डालर की कीमतों के कारण भारतीय मुद्रा वैसे भी दबाव में है जिससे आयात मूल्य बढ़ रहे हैं,इसे घरेलू खपत बढाकर अवशोषित करने की नीतियां बनानी पड़ेगी।

आपदा में अवसर की तलाश का यह एक मौका भी हो सकता है।

इस टैरिफ युद्ध में आशा की एक किरण यह है कि हमारे स्पर्धी देश चीन,वियतनाम और थाईलैंड पर हमारी तुलना में लगभग दोगुना टैरिफ लगाया गया है। अमरीका जिन वस्तुओं का इन देशों से आयात करता है सरकार उनके उत्पादन को देश में बढ़ावा देकर कुछ ट्रेड छीन सकती है लेकिन यह सरकारी समर्थन के बिना संभव नहीं है। साथ ही यूरोपियन यूनियन के देशों में भी बाजार विकसित कर इस संकट को कम किया जा सकता है। इस परिस्थिति से बाहर निकलने में ही मोदी सरकार की योग्यता और दक्षता की परीक्षा है।अगर ट्रेड तनाव को शिथिल करने में सरकार असफल होती है तो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर भी असर पड़ेगा। 2030 तक 500 बिलियन डालर के द्विपक्षीय प्रत्यक्ष निवेश लक्ष्य की पूर्ति कठिन होगी। हमें ध्यान रखना होगा कि अमरीका का भारत से आयात हमारी जीडीपी में लगभग 2.2 फीसदी का योगदान करता है। टैरिफ घोषणा के पहले दिन ही टाटा मोटर,टीसीएस,इन्फोसिस,सोना कोमस्टार ,विप्रो आदि के शेयरों में 4.5 फीसदी से अधिक की गिरावट दर्ज की गई है। अब मोदी सरकार कसौटी पर है और व्यवहारिक निगोसिएशन,समझौते उसकी टीम की योग्यता की परख करेंगे।इन फैसलों से संभावित नुकसान से 31विलियन डालर तक हमारा जीडीपी प्रभावित हो सकता है। भारत अमरीका से लगभग 23 बिलियन डालर का आयात करता है जिस पर लगभग 55 फीसदी टैरिफ घटाने की बातचीत चल रही है अगर यह सफल होती है तो इलेक्ट्रानिक काम्पोनैंट आदि की कीमते घटेंगी जिससे निर्यात घाटे की कुछ पूर्ति हो सकती है ।अगर समझौता टूटता है तो आयात रेवेन्यू घटने से कंपनियां घरेलू बाजार में कीमतें बढ़ायेंगी जिससे मंहगाई बढ़ेगी। छंटनी होगी।अगर हम चूकते हैं तो डूबते हैं । अब हमें देश के मानव बल को उत्पादन बढाने और नये बाजार खोजने में लगाना होगा। तभी तय होगा कि टैरिफ की मार पर भारत है तैयार।

शब्द सामर्थ्य -008

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. संघर्ष, दौड़धूप (उर्दू.) 5. सुपुत्र, लायक पुत्र 7. ताकतवर, बलशाली 9. खुशबू, सुरभि, सुगंध 10. अकारण, व्यर्थ, बेवजह 12. गर्म तेल आदि में खाद्य वस्तु छोड़कर पकाना 13. यात्रा 15. मृत, जो मर गया हो 16. छोटे कद का, वामन, बौना 18. सांप का सिर, गुण, कला, कौशल 20. निरुत्तर, बेमिसाल 23. गोल हरे दानों वाला एक प्रसिद्ध पौधा, या इस पौधे की फली 24.माता, जननी 25. संतान, औलाद 26. अधीन, अधीनस्थ, कर्मचारी 27. चिड़िया, खग तरफदार।

ऊपर से नीचे

1.पानी में डूबा हुआ, जल प्लावित 2. पाकेटमार, जेब काटने वाला 3. समाधान, खेत जोतने का यंत्र 4. औषधालय 6. युक्ति, उपाय 8. गीला, तर, भीगा हुआ 11. झटके से मुंह से आवाज के साथ हवा बाहर आना, बलगम आदि का बाहर आना 14. तुरंत, झटपट 15. स्त्री, नारी, अबला 17. एक और एक चौथाई 19. आदमखोर 21. दुनिया, संसार, जग 22. वर्ष की छः ऋतुओं में एक ऋतु जिसमें मौसम सुहावना रहता है 23. बुद्धि, दिमाग।

1		2	3	4	■	5		6
	■	7			8	■	■	
9			■	10		11	■	
	■	12			■	13	14	
■	15		■	■	■	16		■
■		■	17	■	■	■	18	19
■	20	21		22	■	23		
24	■		■	25			■	
■	26				■	■	27	

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 007 का हल

पी	चि	दं	ब	र	म	■	■	स
ट	■	भ	ला	ई	■	अ	स	म
ना	म	■	■	स	मा	धि	■	झ
■	ज	■	बे	■	न	का	र	ना
बा	बू	■	आ	य	क	र	■	■
■	र	की	ब	■	■	■	प्र	था
ज	■	■	रू	प	क	■	ज	न
हा	■	पा	■	ना	म	ची	न	■
ज	हां	प	ना	ह	■	ता	न	ना

सू- दोकू क्र.008

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.007 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

राशिफल

मेष आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। आज सफलता मिलने से थकान दूर हो जाएगी। आज आपकी कार्यशैली से लोग प्रभावित होंगे। आज प्रॉपर्टी संबंधी कार्य संपन्न होंगे। इसके साथ घर में भी आध्यात्मिक और सकारात्मक वातावरण बना रहेगा। आज घर के बड़े बुजुर्गों के मान-सम्मान का विशेष ध्यान रखें। आप सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेंगे, समाज में आपका सम्मान बढ़ेगा। मां कात्यायनी को फूल अर्पित करें, परिवार में खुशियाँ आएंगी।

वृषभ आज आपका दिन शानदार रहेगा। आज आत्मविश्वास और अच्छे मनोबल के कारण आप बड़ी उपलब्धि प्राप्त करेंगे। आप अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे। आज घर में संबंधियों के आगमन से खुशनुमा माहौल भी बना रहेगा। आज व्यवसाय संबंधी किसी नए काम को शुरू करने का उचित समय है। अपनी कार्य कुशलता को बढ़ाने के लिए आप नई तकनीक का सहारा लेंगे। माँ दुर्गा को लौंग अर्पित करें, स्वास्थ्य बेहतर बना रहेगा।

मिथुन आज आपका दिन व्यस्तता से भरा रहेगा। आज अत्यधिक जिम्मेदारियां रहेंगी परंतु आप उचित व्यवस्था बनाकर सबका हल निकाल लेंगे। आज संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलने के योग बने हुए है। आज परिवारजनों के साथ कोई मनोरंजक अथवा धार्मिक प्रोग्राम बनायेंगे। आज मानसिक सुकून बनाए रखने के लिए योगा, मेडिटेशन आदि का सहारा लें। मां दुर्गा को हलवा का भोग लगायें, रिश्तों में मिठास बनी रहेगी।

कर्क आज आपका दिन अच्छा रहेगा। अनुभवी लोगों से मेल-मिलाप तथा नई जानकारियां हासिल होंगी। आज क्रोध के कारण परिस्थितियां और अधिक बिगड़ सकती हैं, किसी भी मामले का शांतिपूर्ण तरीके से समाधान निकालने का प्रयास करें। आज आर्थिक मामलो में दोस्तों से मदद मिलेगी। आज आप आखों का खास ख्याल रखें। मां कात्यायनी के सामने हाथ जोड़े, माता- पिता का सहयोग मिलता रहेगा।

सिंह आज का दिन आपके अनुकूल रहेगा। आज कई तरह के गतिविधियों में आपका रुझान रहेगा। आज आप ध्यान रखें कि नकारात्मक परिस्थिति बने तो धैर्य और शांति रखना ही उचित है। आज किसी नजदीकी मित्र या रिश्तेदार के साथ कहीं घूमने जायेंगे। आज अधिकतर समय मार्केटिंग तथा बाहरी गतिविधियों को पूरा करने में बीत सकता है। मां दुर्गा का आशीर्वाद लें, धन-धान्य में बढ़ोतरी होगी।

कन्या आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। आज कार्यप्रणाली बेहतर होगी तथा किसी काम में सफलता मिलने से उत्साह बढ़ेगा। जिससे दिन भर की भाग-दौड़ भूल जाएंगे। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। आज आप महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय परिवारवालों की राय अवश्य लें। आज आपको अपने जरुरी दस्तावेज संभाल कर रखने की आवश्यकता है। मां कात्यायनी को नारियल अर्पित करें, रूकें हुए काम पूरें होंगें।

तुला आज नए कार्यों को करने में आपको भाग्य का पूरा साथ मिलेगा। आज व्यवसाय में बहुत अधिक फोकस रहना जरूरी है। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। किसी प्रतियोगी परीक्षा का परिणाम आपके पक्ष में आयेगा। नवविवाहित दंपत्ति आज किसी धार्मिक स्थल पर घूमने जायेंगे। लवमेट के लिए आज का दिन अच्छा है, उपहार मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। मां दुर्गा के सामने कपूर जलाने सें, लाभ के अवसर मिलेंगे।

वृश्चिक आज आपका दिन शानदार रहने वाला है। आज सकारात्मक गतिविधियों में खुद को व्यस्त रखेंगे। आज अपने गुस्से को कंट्रोल में रखें तथा फिजूलखर्चे पर भी नियंत्रण रखें। आज अपनी पूरी ऊर्जा योजनाओं को क्रियान्वित करने में लगाएं। लेकिन अपनी योजनाएं सार्वजनिक ना करें। आज आपका दाम्पत्य जीवन अच्छा रहने वाला है। मां दुर्गा को कुमकुम का टीका लगायें, कार्यक्षेत्र में तरक्की के अवसर प्राप्त होंगे।

धनु आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। आज कुछ नई उपलब्धियां आपका इंतजार कर रही हैं। इस बेहतरीन समय का उचित सदुपयोग करें । आज महत्वपूर्ण तथा उच्च पद पर आसीन व्यक्तियों के साथ आपका समयबीतेगा। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। आज घर की व्यवस्था को व्यवस्थित रखने के लिए सबको अनुशासित रखना अति आवश्यक है। आज अपने व्यवसाय की गतिविधियों में भी बदलाव लाए। मां कात्यायनी का ध्यान करें, मन में शान्ति बनी रहेगी।

मकर आज आपकी कई योजनाएँ समय से पूरी हो जायेंगी। आज बड़े बुजुर्गों के मार्गदर्शन से आप रुका हुआ काम पूरा कर लेंगे। आज व्यर्थ के खर्चे पर नियंत्रण रखें। छात्रों को आज अच्छी ख़बर मिलने के योग बने हुए है। आज नौकरी कर रहे लोग अपना टारगेट आसानी से पूरा कर लेंगे। आज घर में शांतिपूर्ण माहौल रहेगा। जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। बच्चे खेल कूद में व्यस्त रहेंगे। मां दुर्गा की आरती करें, घरेलू समस्याएं समाप्त होंगी।

कुंभ आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वला है। आज आप कुछ बड़ा और अलग काम करने की सोच सकते है। आज का दिन परिवार के साथ हर्षोल्लास में बीतेगा। आज आप अनुभवी लोगों के मार्गदर्शन पर जरूर अमल करें, निश्चित ही आपको सफलता मिलेगी। आज अचानक धनलाभ होने से आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। कार्यों में आज जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। मां दुर्गा के सामने घी का दीपक जलायें, सभी कार्यों में सफलता मिलेगी।

मीन आज आपके अधूरे कार्य पूरे हो जायेंगे। आज आप बच्चों से मित्रवत व्यवहार रखें तथा उनकी समस्याओं को सुने और सुलझाएं। आज व्यवसाय में रोज की अपेक्षा अच्छा लाभ होगा। आज कैश के लेन-देन में सावधानी बरतें। दोस्तों के साथ बाहर जाने का प्लान कैंसल करना पड़ सकता है।आज आपके व्यापार में अच्छा धन लाभ होगा । मां कात्यायनी को इलायची अर्पित करें, आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

प्रसिद्ध धर्मस्थली कामाख्याधाम

(रीता मिश्रा-विनायक फीचर्स)

प्रसिद्ध धर्मस्थली कामाख्या धाम, गुवाहाटी से तकरीबन दो किलोमीटर पूर्व में नीलांचल पर्वत पर स्थित है, जिसकी ऊंचाई 525 फीट है। कामाख्या मंदिर देश विदेश के पर्यटकों के लिए प्रसिद्ध धाम के रूप में प्रसिद्ध और सिद्ध है। भगवान त्रिलोचन शिव के कन्धे से छिन्न-भिन्न होकर सती के अंग भिन्न-भिन्न स्थानों पर गिरे। ये स्थान तीर्थरूप में प्रसिद्ध हुए। ये सभी सिद्धपीठ कहे जाते है। देवी इन स्थानों में विद्यमान रहती है, इस कारण ये सब सिद्ध पीठ माने जाते है। नीलाचंल पर्वत पर सती माता का योनिमण्डल कटकर, गिरकर पत्थर बन गया। इस शिला के स्पर्श मात्र से मनुष्य अमरत्व को प्राप्त कर ब्रह्मलोक में निवास कर अंत में मोक्ष लाभ करते है, ऐसा माना जाता है। मान्यता है कि मंदिर की दीवारों पर चौसठ योगिनियां और अष्टादश भैरवों की मूर्ति खुदवाकर कामदेव ने इसे आनन्दाख्य मंदिर के नाम से प्रचारित किया। आज इस मंदिर के नीचे का भाग ही शेष रह गया है। कामरूप तथा कामाख्या पर्वत के चारों और अनेक तीर्थ स्थान है। इसमें उमानन्द, अश्क्रांत, मणिकणेश्वर, नवग्रह, उग्रतारा, वशिष्ठाश्रम, पाण्डुनाथ और हथग्रीव आदि प्रसिद्ध है। कामाख्या देवी के समीप ही उत्तर की ओर सौभाग्य कुण्ड है, सर्वप्रथम तीर्थयात्री इसी सौभाग्यकुण्ड में स्नान कर मंदिर में प्रवेश करते है। कामाख्या मंदिर, विशिष्ठ शिलापीठ के ऊपर है यहां पाताल से निरन्तर जल निकलता रहता है। यही कामाख्या योनिमण्डल है। जिसका परिमाण एक हाथ लम्बा तथा बारह अंगुल चौड़ा है मातृअंग होने के कारण इसका आधा भाग सोने की टोप से ढ़का रहता है और आधे भाग को भी वस्त्र, पुष्प माल्यादि से सुशोभित रखा जाता है। कामाख्या में कुमारी पूजा का अत्यधिक महत्व है। कुमारी पूजा करने से सम्पूर्ण देवी, देवताओं की पूजा का फल प्राप्त होता है। प्रतिवर्ष देवी मंदिर में विभिन्न पर्वो के उपलक्ष्य में उत्सव पूजा आदि कार्य बड़े समारोह के साथ अनुष्ठित होते है, जिसमें %अम्बुवासी% मेला प्रसिद्ध है। आषाढ़ महीने में मृगशिरा नक्षत्र के तृतीय चरण बीत जाने पर चतुर्थ चरण में आद्रा नक्षत्र के प्रथम पाद के मध्य में देवी मां ऋतुवती हुई थी, इसी समय पांच दिनों का यह अम्बुवासी मेला लगता है। तीन दिन तक मंदिर का द्वार बंद रहता है, चौथे दिन कपाट खुलने पर यात्रियों को दर्शन करने दिया जाता है। इस अवसर पर देश-विदेश से भारी संख्या में साधु, महात्मा, औघड़ एवं तांत्रिक एकत्रित होकर अपनी तंत्र विद्या की साधना करते है। जिनके ठहरने तथा खाने-पीने के लिए अनेक स्वयंसेवी सस्थायें निरन्तर कार्यरत रहती है। प्राचीन काल में यह ज्योतिष का प्रमुख केन्द्र माना जाता था। कामाख्या मंदिर के पास ही पूजा पाठ की सभी सामग्रियां उपलब्ध हो जाती है। होटल, फल-फूल तथा मिठाई की दुकानें भी है। इसके अतिरिक्त पर्वत के ऊपर पर्यटकों के रहने, खाने तथा अन्य सभी सुख-सुविधाओं का भी उचित प्रबंध नगर-निगम द्वारा किया जाता है। जिससे यात्रियों को असुविधा नहीं होती है। यहां यात्रियों के आवागमन की सुविधाएं भी पर्याप्त है जिससे असुविधा का प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार जगन्माता कामाख्या देवी का मंदिर सभी दृष्टियों से मनोरम तथा उपयुक्त फलदायक है।जो व्यक्ति भक्ति भाव से योनिमण्डल के दर्शन-स्पर्शन करके जलपान करते हैं, वे देवऋष्टा, पितृऋष्टा से मुक्त हो परम धाम को प्राप्त होते है। कोटि गोदान करने से जो फल मनुष्य को मिलता है वही फल कामाख्या देवी की पूजा करने से प्राप्त होता है।

अंतरराष्ट्रीय विवेक दिवस पर विशेष

आत्मा की आवाज है विवेक

जीवन में असाधारण मात्रा में साधारण ज्ञान को ही विवेक कहते हैं। संसार के समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ प्राणी मनुष्य है। मनुष्य के मानस की बड़ी शक्ति है विवेक, जिसके पीछे मन और बुद्धि की भूमिका शामिल है। मन को विचारों का पुंज कहा गया है। यह अपनी सोच से बाहरी दुनिया का अनुभव करता रहता है। विवेक व्यक्ति की एक व्यक्तिगत नैतिक भावना है, जो यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि क्या सही है और क्या गलत? विवेक के बारे में अधिक अध्ययन कर हम अत्याधिक विवेक वाले बेहतर व्यक्ति बन सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय विवेक दिवस पर समझते हैं जीवन का आधार और आत्मा की आवाज विवेक का महत्व.....

डॉ. केशव पाण्डेय

5 अप्रैल को प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय विवेक दिवस मनाया जाता है, जो मानव विवेक के मूल्य को दर्शाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य मानवीय विवेक के महत्व को पहचानना और करुणा की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करना है। संयुक्त राष्ट महासभा ने 25 जुलाई 2019 को इस दिवस की घोषणा की थी। 5 अप्रैल 2020 में पहला अंतराष्ट्रीय विवेक दिवस मनाया गया, तब से यह सिलसिला जारी है। ÷प्रेम और विवेक के साथ शांति की संस्कृति को बढ़ावा देना÷ इसकी थीम है। यह आत्म-परीक्षण और नैतिक रूप से कार्य करने के मूल्य पर जोर देने का अवसर है। ताकि आवश्यक सुधारों को इंगित करके समग्र रूप से समाज के विकास में भी मदद की जा सके। संयुक्त राष्ट संगठन के अनुसार, ÷भविष्य की पीढ़ियों को युद्ध के अभिशाप से बचाने संयुक्त राष्ट के कार्य के लिए शांति की संस्कृति की और परिवर्तन की आवश्यकता है। जो अपने समाज की विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए सभी अधिकारों और साधनों के पूर्ण प्रयोग की गारंटी देते हों।÷ क्योंकि जीवन में किसी भी कार्य को करने और उसमें सफलता पाने के लिए बुद्धि और विवेक की आवश्यकता पड़ती है। जो कार्य आप कभी अपने बल से नहीं कर सकते हैं, उसे आप बुद्धि की मदद से बड़ी आसानी से कर सकते हैं। जिसके पास स्वयं का विवेक नहीं है, शास्त्र उसका क्या करेंगे? जैसे नेत्रविहीन व्यक्ति के लिए दर्पण व्यर्थ है। मानव मन बड़ी मुश्किल से टिकता है। जब मन सोच-विचारों को स्वीकार करता है तो इसका नियमन बुद्धि करती है। जिससे यह बुद्धि जुड़ी हुई है। बुद्धि सुमति और कुमति दो रूपों वाली है। जो कर्म-क्रिया की प्रेरक है। बुद्धिमान व्यक्ति ही सुमति से अपने कार्य का सफल निष्पादन कर लेता है। सुमति सद्बुद्धि से विवेक और कुमति अविवेक देती है। मनुष्य विवेक के आलोक में रहे तो बुद्धि सही निर्णय लेने में सफल हुआ करती है। लौकिक जगत की सांसारिक-भौतिक जरूरतें और आविष्कार जो मानवीय बुद्धि से लोगों तक पहुंचकर उपयोगी साबित हुए हैं। दुनिया में जितने भी आविष्कार हुए वह सब इसी बुद्धि कौशल के कारण संभव हुए। सुमति या सद्बुद्धि सात्विक प्रवृत्ति की है। इसके विपरीत यह बुद्धि कुप्रेरणा और कुसंग के कारण दूषित हुई। इसी संसार में अनेक अच्छाइयों और बुराइयों के उदाहरण शामिल हैं। मनुष्य अपनी ग्रहणशीलता से कितनी अच्छाइयों को आत्मसात करता हुआ विवेकशील हो, यह उस पर निर्भर है। मनुष्य की श्रेष्ठता व सार्थकता विवेकपूर्ण जीवन जीने में है। विवेकशीलता के अभाव में मनुष्य सच्चा सुख

और शांति से दूर होता जा रहा है। सत्कर्म का कारण बुद्धि की प्रेरक शक्ति विवेक ही है। जो सत्प्रेरणा के साथ उचित निर्णय करने में सहायक है। इसीलिए विवेकपूर्ण कृत्य के दोष रहित होने की संभावना बलवती बनी रहती है। वस्तुस्थिति का सही मूल्यांकन कर सकना, कर्म के प्रतिफल का गंभीरतापूर्वक निष्कर्ष निकालकर श्रेयस्कर दिशा देने की क्षमता केवल विवेक में होती है। उचित-अनुचित के सम्मिश्रण में से श्रेयस्कर को अपना लेना विवेक बुद्धि का कार्य है। विवेक के अभाव में सही दिशा का चयन नहीं हो सकता। मनुष्य विवेक द्वारा ही भावनाओं के प्रवाह और अति श्रद्धा या अंध श्रद्धा से बच सकता है। विश्वास का प्रयोग अपने से कहां तक और कितना किया जाता है, इसका निश्चय विवेक बुद्धि ही कराती है। विवेक जागरूकता की कुंजी है। विवेकशीलता को ही सत्य की प्राप्ति का साधन कहा जा सकता है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हम अपने विवेक को समझें। आजकल लोग विवेक के बारे में बहुत सुनते हैं,जिससे बहस छिड़ जाती है और ज़रूरत पड़ने पर सुधारात्मक कार्रवाई भी की जाती है। विवेक की जांच करने से हमें दूसरों के नैतिक सिद्धांतों को समझने में मदद मिल सकती है।

इसकी वजह है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक नैतिक आवाज होती है, जिसे हम 'विवेक' कहते हैं। यह विवेक हमें सही और गलत में अंतर करने, न्याय की भावना को अपनाने और सामाजिक समरसता की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देता है। भारत, ÷सर्वे भवंतु सुखिनः÷ और ÷वसुधैव कुटुम्बकम÷ जैसे सिद्धांतों पर आधारित एक सांस्कृतिक राष्ट है, जो सदियों से विवेक और नैतिकता की मिसाल रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों,वेद, उपनिषद, भगवद गीता और रामायण में विवेक को आत्मा की आवाज़ माना गया है। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने लिखा है कि ÷बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।। " इस चौपाई के माध्यम से तुलसीदास जी सत्संग की महिमा बताते हैं। इसका अर्थ है कि प्रभु को पाने के लिए भी प्रभु की कृपा आवश्यक है, इसके लिए विवेक जरूरी है। संतों और महापुरुषों, जैसे- महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने भी अपने जीवन में विवेक आधारित निर्णयों को प्राथमिकता और देश को एक नैतिक दिशा दी। आज के समय में भारत की नई शिक्षा नीति में भी नैतिक शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया है, ताकि बच्चों में प्रारंभ से ही विवेक और नैतिक मूल्यों का विकास हो। वर्तमान समय में जब भ्रष्टाचार, अन्याय और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तो विवेक आधारित निर्णय लेना और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में विवेकपूर्ण नागरिक ही एक सशक्त राष्ट का निर्माण कर सकते हैं। भारत विविधताओं का देश है, और यहां धार्मिक, भाषाई, जातीय मतभेदों के बावजूद यदि समाज में शांति बनी हुई है, तो उसका कारण है लोगों का विवेक, जो उन्हें एक-दूसरे के प्रति सहनशील और संवेदनशील बनाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि एक शांति-प्रिय और विवेकशील राष्ट के रूप में उभरी है। भारत ने विश्व मंच पर हमेशा मानवता, अहिंसा, और न्याय की बात की है। अंतरराष्ट्रीय विवेक दिवस हमें याद दिलाता है कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में विवेक की कितनी अहम भूमिका है। भारत जैसे देश के लिए यह दिन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि हमारी सभ्यता और संस्कृति में विवेक को जीवन का आधार माना गया है। यदि प्रत्येक भारतीय अपने विवेक की आवाज़ सुने और उस पर चले, तो न केवल हमारा देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व अधिक शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और मानवतावादी बन सकता है। क्योंकि आत्मा की आवाज है विवेक ... और विवेक से सदैव सबका भला ही होता है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

कलेक्टर ने जिले में 10 करोड़ रूपये से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की समीक्षा की

विभागीय अधिकारियों को कार्यों को पूरी गुणवत्ता के साथ समय सीमा में पूर्ण करने के दिये निर्देश

रीवा,कासं.। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने जिले में 10 करोड़ रूपये से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा के दौरान विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि पूरी गुणवत्ता के साथ समय सीमा में कार्यों को पूर्ण करायें।

कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने सिंचाई विभाग की नहरों के कार्य प्राथमिकता से पूर्ण कराने तथा भवन निर्माण कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि टीआरएस कालेज में निर्माणाधीन भवनों की प्रगति धीमी है शीघ्रता से कार्य हो तथा स्वास्थ्य विभाग के केन्द्रों एवं छात्रावास भवनों के निर्माण कार्यों को संबंधित विभाग गति दें। जिले में 10 करोड़ रूपये से अधिक की लागत से विभिन्न विभागों के 57 कार्य स्वीकृत है। कलेक्टर ने विभागवार एवं कार्यवार समीक्षा करते हुए चिकित्सा शिक्षा विभाग अन्तर्गत मेडिकल कैंपस में निर्माणाधीन डॉक्टर्स क्वार्टर्स के कार्य में धीमी प्रगति पर निर्माण एजेंसी के विरूद्ध कार्यवाही किये जाने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये। उन्होंने गुढ़ औद्योगिक क्षेत्र में जून से पूर्व पाइप लाइन द्वारा जल की उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया। विद्युत मंडल के आरडीएस योजना के तहत कार्यों तथा हाउसिंग बोर्ड द्वारा पुर्नघन्त्वीकरण योजना से कराये जा रहे कार्यों की कलेक्टर ने बैठक में समीक्षा की। उन्होंने मेडिकल कालेज में निर्माणाधीन अकादमिक भवन को मेडिकल कालेज को शीघ्र हस्तांतरित करने के निर्देश पीआईयू को दिये। उन्होंने बैठक में अनुपस्थित विभागीय अधिकारियों को नोटिस जारी किये जाने हेतु निर्देशित किया। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, डीन मेडिकल कालेज डॉ. सुनील अग्रवाल एवं अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा आरपी सिंह तथा विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

त्योंहारों के मद्देनजर मऊगंज जिले में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी

रीवा,कासं.। चैत्र नवरात्रि, ईद-उल-फितर, हनुमान जयंती, अम्बेडकर जयंती सहित अन्य त्योहारों में कानून व्यवस्था बनाये रखने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी मऊगंज संजय कुमार जैन ने धारा 163 के तहत जिले में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किये हैं। पुलिस अधीक्षक मऊंगज के प्रतिवेदन पर मऊगंज जिले में नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 2023 की धारा 166 के तहत जारी आदेश आगामी दो माह तक प्रभावशील रहेगा। आदेश के तहत समस्त प्रकार के आयोजनों की अनुमति प्रशासनिक अधिकरियों से प्राप्त किये जाने के उपरान्त ही किया जायेगा।

अनुमति प्राप्त नहीं होने पर किये जाने वाले आयोजनों को अवैधानिक घोषित करते हुए आवश्यक वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित की जायें। संपूर्ण मऊगंज जिले में दो पहिया वाहन रैली को पूर्णतः प्रतिबंधित किया गया है। डी.जे. पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा तथा मध्यप्रदेश कोलाहल नियंत्रण अधिनियम एवं ध्वनि प्रदुषण नियम में निर्धारित प्रावधानों का पालन अनिवार्य रुप से किया जाय तथा ध्वनि विस्तारक यंत्रों से आपत्तिजनक नारे/गाने इत्यादि पूर्णतः प्रतिबंधित रहेंगे। प्रशासनिक अनुमति प्राप्त आयोजनों में ऐसे नारे अथवा शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाये, जिनसे किसी भी धर्म/वर्गो की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचे। ऐसा पाये जाने की दशा में संबंधित व्यक्ति के साथ-साथ कार्यक्रम में आयोजकों का भी उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाकर उनके विरुद्ध विधिसम्मत कार्यवाही की जावेगी।

कोई भी व्यक्ति/संस्था/पशु मालिक अपने पशुओं को खुले तौर पर सड़को पर न छोड़ें और न ही सड़को पर आने देवे। घरेलू नौकरों एवं व्यवसायिक नौकरों की सूचना संबंधित मालिकों के द्वारा थाने पर विहित प्रारुप में देने के उपरान्त ही इन्हें रखा जावे। होटल, लांज, धर्मशाला में रुकने वाले व्यक्तियों से पहचान पत्र अनिवार्य रुप से लिया जावे एवं ठहरने वाले व्यक्तियों की सूची विहित प्रारुप में प्रतिदिन संबंधित थाने पर दी जावे।

पेईंग गेस्ट की सूचना संबंधित मकान मालिक द्वारा विहित प्रारुप में थाने पर दी जाए, इसके उपरान्त ही पेईंग गेस्ट रखा जावे। किसी भी व्यक्ति द्वारा अपने मकान में यदि किरायेदार रखा जाता है, तो इसकी सूचना संबंधित थाने में लिखित रुप से प्रदाय किया जाना अनिवार्य होगा। मऊगंज जिले की संपूर्ण राजस्व सीमा क्षेत्र में किसी भी आपत्तिजनक अथवा उद्वेलित करने वाली फोटो/चित्र/मैसेज करने या साम्प्रदायिक मैसेज करने या इनकी फारवर्डिंग/लाईक, ट्वीटर/एक्स, फेसबुक, व्हाट्सअप इत्यादि सोशल मीडिया पर करने या इन पर कमेंट/लाईक करने की गतिविधियों को प्रतिबंधित किया जाने एवं सोशल मीडिया के ग्रुपों पर विशेष निगाह रखे जाने का आदेश दिया गया है।

उन्होंने कहा है कि यह आदेश सर्व साधारण को सम्बोधित है एवं परिस्थितियां ऐसी है कि समय अभाव के कारण सर्वसाधारण को सूचना तामील नहीं की जा सकती और न ही सर्व साधारण से आपत्तियों प्राप्त की जा सकती है।

अतः यह आदेश एक पक्षीय पारित किया जाता है। आदेश का प्रचार-प्रसार स्थानीय समाचार पत्रों/इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से कराया जा रहा है। आदेश का उल्लंघन होने पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 तथा अन्य समस्त प्रावधानों के अंतर्गत कार्यवाही की जावेगी। यह आदेश तत्काल प्रभाव से प्रभावशील होगा एवं जारी किये जाने की तिथि से दो माह तक मऊगंज जिले की सीमा अंतर्गत प्रभावशील रहेगा।

जल गंगा संवर्धन अभियान: रिचार्ज कूपों से होता है भूमिगत जल का संवर्धन

रीवा,कासं.। पानी धरती पर जीव-जंतुओं और वनस्पितियों के जीवन का आधार है। पृथ्वी के लगभग 70 प्रतिशत भाग पर पानी है। यह पानी महासागरों में संचित होकर वर्षा का आधार बनता है। शेष लगभग 30 प्रतिशत पानी पृथ्वी की सतह पर नदियों, बांधों, तालाबों, हिमनद व ग्लेश्यिरों तथा पृथ्वी के अंदर भूमिगत जल के रूप में संचित है। मानव के दैनिक उपयोग और पेयजल के लिए भू जल का बहुत अधिक उपयोग किया जा रहा है। ट्यूबवेल के माध्यम से सिंचाई के लिए भी भूमिगत जल का भारी मात्रा में उपयोग हो रहा है। पृथ्वी पर हरियाली और वृक्ष घटने तथा लगातार बढ़ रहे पक्के निर्माण कार्यों के कारण धरती में पर्याप्त मात्रा में वर्षा जल का भण्डारण नहीं हो पा रहा है। वर्षा का पानी धरती के अंदर कम मात्रा में जाता है। इसकी अधिकतर मात्रा नदियों के माध्यम से बहकर पुनः महासागरों में मिल जाता है। भूमिगत जल का संवर्धन करने के लिए रिचार्ज कूप बहुत उपयोग उपाय है। इसके माध्यम से बरसात के बहते हुए पानी को रिचार्ज पिट के माध्यम से फिल्टर करके कुएं में भेजा जाता है। कुएं के माध्यम से धरती के आंतरिक जल स्त्रोतों में पहुंचकर साफ पानी भण्डारित होता है। रिचार्ज कूप बनाने के लिए ऐसे कुओं का चयन करें जिनमें वर्षा के बाद दिसम्बर-जनवरी महीने तक पानी रहता है। कुएं से तीन से छः मीटर की दूरी पर ऐसे स्थान पर रिचार्ज पिट बनाएं जहाँ वर्षा का पानी पर्याप्त मात्रा में संचित होता है। रिचार्ज पिट में नीचे से 50 से.मी. की ऊंचाई पर पाइप लगाकर इसे कुएं से जोड़ दें। रिचार्ज पिट की गहराई तीन मीटर रखें। इसमें सबसे नीचे की परत में 150 एमएम की गिट्टी बिछाएं। इसके बाद इसमें 63 एमएम से 100 एमएम साइज के पत्थरों की परत बिछाएं। इसके बाद आधा मीटर की मोटाई में पुनः 100 से 150 एमएम की गिट्टी बिछाएं। ऊपरी परत को समय-समय पर साफ करना आवश्यक है जिससे कुएं में साफ पानी जाए। रिचार्ज में जितना अधिक पानी वर्षाकाल में जाएगा उतना ही जल संचय बढ़ेगा। हर कुएं में रिचार्ज पिट बनाकर इन्हें 12 मासी बनाया जा सकता है। सामान्य तौर पर लगभग 25 हजार रुपए में रिचार्ज पिट का निर्माण हो जाता है।

पुस्तक एवं गणवेश मेला का कलेक्टर ने किया शुभारंभ

एक ही स्थान में सभी विद्यालयों की पुस्तकें एवं गणवेश रियायती दर पर उपलब्ध हैं

रीवा,कासं.। दो दिवसीय पुस्तक एवं गणवेश मेला का कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने फीता काटकर शुभारंभ किया। मानस भवन में आयोजित मेले में विभिन्न विद्यालयों की पुस्तकें एवं गणवेश रियायती दर पर उपलब्ध रहेंगे। पुस्तक मेले के शुभारंभ के उपरांत कलेक्टर ने पुस्तक व ड्रेस विक्रेताओं से चर्चा की तथा निर्देश दिये कि निर्देशानुसार विद्यालयों की सभी पुस्तकें उपलब्ध करायें जिससे अभिभावक को पुनः किताब खरीदने न आना पड़े। उन्होंने अभिभावकों व विद्यार्थियों से भी संवाद किया।

विद्यार्थियों एवं उनके परिजनों ने कलेक्टर को इस पहल के लिये धन्यवाद दिया तथा कहा कि हमें अपने विद्यालय की किताबें व ड्रेस एक ही जगह मिल रही हैं और उनमें छूट भी दी जा रही है। उन्होंने कुछ किताबें न होने की बात कलेक्टर को बताई। कलेक्टर ने तत्काल व्यवस्था कराने के निर्देश दिये। पुस्तक मेला के भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने विक्रेताओं के स्टाल का निरीक्षण किया तथा निर्धारित मापदण्ड के अनुसार पुस्तक व ड्रेस विक्रय किये जाने के निर्देश दिये।

उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि प्रत्येक स्टाल में विभागीय एक व्यक्ति की परिचय पत्र के साथ ड्यूटी लगायें तथा इस बात को सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों व अभिभावकों को वांछित पुस्तकें मिलें और उन्हें भटकना न पड़े। कलेक्टर ने भीड़ को नियंत्रित कर व्यवस्थायें सुनिश्चित कराने तथा पीने के पानी व छाया की व्यवस्था कराने के भी निर्देश दिये। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, जिला शिक्षा अधिकारी सुदामा लाल गुप्ता, प्राचार्य वरूणेन्द्र सिंह, सहायक संचालक राजेश मिश्रा उपस्थित रहे।

खेल/व्यापार

संक्षिप्त समाचार

रुपये में तेजी जारी, डॉलर के मुकाबले 3 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंचा

नई दिल्ली ,ए.। डॉलर के मुकाबले रुपये में तेजी का दौर जारी है। शुक्रवार को यह 85 के नीचे पहुंच गया, जो कि अमेरिकी मुद्रा के खिलाफ तीन महीने का सबसे उच्चतम स्तर है। कारोबारी सत्र की शुरुआत में डॉलर के मुकाबले रुपया 85.04 पर खुला और शुरुआती कारोबार में ही यह 84.99 पर पहुंच गया है, जो पिछले सत्र में डॉलर के मुकाबले रुपया की क्लोजिंग 85.44 से 40 पैसे अधिक है। डॉलर के मुकाबले रुपये में तेजी की वजह अमेरिकी राष्ट्पति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लगाए गए रेसिप्रोकल टैरिफ से डॉलर के कमजोर होने और कच्चे तेल में गिरावट को माना जा रहा है। ट्रंप द्वारा टैरिफ के ऐलान के बाद से दुनिया के छह बड़े देशों की मुद्रा के खिलाफ अमेरिकी मुद्रा की मजबूती दर्शाने वाले डॉलर इंडेक्स में बड़ी गिरावट देखी गई है। यह कमजोर होकर 101.69 के करीब आ गया है। टैरिफ ऐलान के समय गुरुवार को डॉलर 104 के आसपास था। जानकारों का कहना है कि राष्ट्पति ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ उम्मीद से ज्यादा हैं, जिसके कारण अमेरिकी अर्थव्यवस्था के मंदी में जाने का खतरा है और इस कारण डॉलर में कमजोरी देखी जा रही है। डॉलर के मुकाबले रुपये में मजबूती की एक वजह कच्चे तेल में बड़ी गिरावट होना है। ब्रेंट क्रूड 69.64 डॉलर प्रति बैरल के करीब बना हुआ है।भारत अपनी जरूरत का 80 प्रतिशत से अधिक कच्चा तेल आयात करता है, ऐसे में जब भी कच्चे तेल की कीमत में गिरावट आती है तो देश को बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा बचत करने में मदद मिलती है और इससे रुपये को सहारा मिलता है। एलकेपी सिक्योरिटी में वीपी रिसर्च एनालिस्ट (कमोडिटी और करेंसी), जतिन त्रिवेदी ने कहा कि डॉलर के मुकाबले रुपये में तेज रिकवरी देखने को मिली है। वैश्विक संकेतों और एफआईआई फ्लो के कारण डॉलर के मुकाबले रुपया 85 से 85.90 के बीच में रह सकता है।

ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने एआई को लेकर 'भारत' की तारीफों के पुल बांधे

नई दिल्ली ,ए.। ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने हाल ही में भारत की तारीफ करते हुए कहा कि क्रिएटिविटी और एआई अपनाने के मामले में भारत दुनिया से आगे निकल रहा है। उनकी टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब कंपनी के लेटेस्ट 4ओ इमेज जेनरेशन टूल की मांग तेजी से बढ़ रही है, जो स्टूडियो घिबली-स्टाइल के एनिमेशन बनाता है। इस फीचर को पिछले सप्ताह चैटजीपीटी के लिए प्रोडक्ट अपडेट के तहत लाया गया है। ओपनएआई के सीईओ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत में एआई अपनाने को लेकर जो हो रहा है, वह देखना आश्चर्यजनक है। उन्होंने कहा, हमें क्रिएटिविटी का एक्सप्लोजन देखना बेहद पसंद है और भारत दुनिया से आगे निकल रहा है। भारत के एआई को लेकर इस उत्साह की तारीफ करने के साथ ही ऑल्टमैन ने खुद का एक क्रिकेट थीम- बेस्ड पोर्ट्रेट इंडियन क्रिकेट प्लेयर के रूप में पेश किया, जिसे एआई ने जनरेट किया था। इस पोर्ट्रेट के लिए उन्होंने प्रॉम्प्ट भी शेयर किया, पोर्ट्रेट के लिए ऑल्टमैन का प्रॉम्प्ट 'सैम ऑल्टमैन एज अ क्रिकेट प्लेयर इन एनिमे स्टाइल' था। ऑल्टमैन ने घिबली यूजर्स को इस फीचर के दूसरे वर्जन के बारे में भी बताया, जिसके लिए उन्हें लगता है कि लोग तैयार नहीं हैं।इस बीच, ऑल्टमैन ने बताया कि चैटजीपीटी को लेकर यूजर्स की भारी मांग देखने को मिल रही है, जो कि घिबली-स्टाइल एआई आर्ट ट्रेंड के इंटरनेट पर तेजी से वायरल होने की वजह से है। ऑल्टमैन ने बताया कि क्षमता चुनौती की वजह से ओपनएआई की ओर से अपकमिंग रिलीज को लेकर देरी हो रही है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, हम स्थिति को अपने नियंत्रण में करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन ओपनएआई द्वारा अपकमिंग रिलीज को लेकर कुछ देर होगी। कुछ सर्विस स्लो भी होंगी, ऐसा क्षमता चुनौती की वजह से हो रहा है। इस बीच, सैम ऑल्टमैन की भारत को लेकर की गई इस पोस्ट को लेकर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने ओपनएआई के सीईओ को अमरावती आने का निमंत्रण दिया है।

सनराइजर्स पर भारी पड़े नाइटराइडर्स, लगातार 5वीं जीत के साथ बनाया बड़ा रिकॉर्ड

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2025 में गुरुवार को कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) को 80 रनों से हरा दिया। सनराइजर्स पर केकेआर की यह लगातार पांचवीं जीत है। पिछले सीजन (2024) के फाइनल मुकाबले में भी केकेआर के हाथों सनराइजर्स हैदराबाद को हार का सामना करना पड़ा था। आईपीएल के इतिहास में सनराइजर्स का प्रदर्शन केकेआर के सामने फीका ही रहा है।

गुरुवार को ईडन गार्डन में सनराइजर्स हैदराबाद की टीम का साधारण सा प्रदर्शन इसका सटीक उदाहरण है। केकेआर ने हैदराबाद के सामने 80 रन की जीत के साथ दिल्ली कैपिटल्स के एक रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। आईपीएल के इतिहास में केकेआर दिल्ली कैपिटल्स के बाद दूसरी ऐसी टीम बन गई है जिसने सनराइजर्स हैदराबाद पर लगातार पांचवीं जीत हासिल की है। इससे पहले दिल्ली कैपिटल्स ने 2020-23 के दौरान सनराइजर्स हैदराबाद पर लगातार पांच जीत हासिल की थी। केकेआर ने 2023-25 के दौरान लगातार पांच जीत हासिल की है। 2018 में सीएसके ने हैदराबाद को चार बार लगातार हराया था। वहीं, 2020-21 के दौरान केकेआर ने हैदराबाद पर लगातार चार बार जीत दर्ज की थी।

यह सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ आईपीएल में केकेआर की 20वीं जीत थी। इसके साथ ही नाइट राइडर्स आईपीएल के इतिहास में पहली ऐसी टीम भी बन गए हैं जिन्होंने विपक्षी तीन टीमों को 20 या उससे अधिक बार हराया है। केकेआर ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और सनराइजर्स हैदराबाद को 20 बार हराया है। वहीं, पंजाब किंग्स को केकेआर ने 21 बार आईपीएल के इतिहास में मात दी है।

हालांकि, इस लिस्ट में मुंबई इंडियंस सबसे आगे हैं। पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस ने केकेआर को आईपीएल के इतिहास में अब तक 24 बार हराया है।

आईपीएल 2025 सीजन की अंक तालिका की बात करें तो सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मिली शानदार जीत के बाद केकेआर प्वाइंट टेबल में 10वें स्थान से छलांग लगाकर सीधे 5वें स्थान पर पहुंच गई है। केकेआर के पास 4 मैचों में दो जीत और दो हार के साथ चार अंक हैं।

वहीं, सनराइजर्स हैदराबाद प्वाइंट टेबल में सबसे नीचे पहुंच चुकी है। सनराइजर्स हैदराबाद के पास चार मैचों में एक जीत और तीन हार के साथ दो अंक हैं। टीम का नेट रन रेट भी काफी कम है।

आईपीएल 2025 : वेंकटेश अय्यर की पारी के कायल हुए इयोन मार्गन

-कहा- सीजन में बढ़ेगा उनका आत्मविश्वास

नईदिल्ली,एजेंसी। पूर्व इंग्लैंड कप्तान इयोन मॉर्गन ने कहा कि कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के ऑलराउंडर वेंकटेश अय्यर की 60 रन की धमाकेदार पारी, सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 80 रन की बड़ी जीत में अहम रही और यह पारी आईपीएल 2025 में उनके लिए एक नया मोड़ ला सकती है। पहले दो मैचों में खराब प्रदर्शन के बाद यह पारी उनके आत्मविश्वास को बढ़ा सकती है। वेंकटेश अय्यर को इस बार की नीलामी में कोलकाता ने 23.75 करोड़ रुपये में फिर से खरीदा था। लेकिन शुरुआती दो मैचों में वे रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और मुंबई इंडियंस के खिलाफ सिर्फ 6 और 3 रन ही बना सके थे। फिर हैदराबाद के खिलाफ उन्होंने 29 गेंदों में 60 रन ठोक डाले, जिसमें 7 चौके और 3 छक्के शामिल थे। मॉर्गन ने कहा, हमने कई बार देखा है कि जब खिलाड़ियों पर बड़ी कीमत का दबाव होता है, तो वे अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते। लेकिन वेंकटेश की यह पारी दिखाती है कि शायद अब उनका सीजन सही रास्ते पर आ जाए और कोलकाता की बल्लेबाजी को मजबूती मिले।

इसके साथ ही मॉर्गन ने अजिंक्य रहाणे की शांत और सोच-समझकर की गई कप्तानी की भी तारीफ की। उन्होंने कहा, रहाणे शानदार थे। मैदान पर फैसले लेते समय भावनाओं को एक तरफ रखना एक अच्छे कप्तान की पहचान होती है, और उन्होंने ऐसा ही किया। जब शुरुआती विकेट मिले, तो उन्होंने सही समय पर गेंदबाजी में बदलाव किए, जिससे मैच को अपने पक्ष में कर लिया। शुरुआती झटकों के बाद अंग्कृष रघुवंशी और वेंकटेश अय्यर के अर्धशतकों की मदद से केकेआर ने 20 ओवर में 200 रन बनाए।

एसीसी के नये अध्यक्ष बने पीसीबी प्रमुख नकवी

दुबई, (ए.)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के नये अध्यक्ष बने हैं। नकवी श्रीलंका के शम्मी सिल्वा की जगह लेंगे। एसीसी अध्यक्ष पद सभी सदस्य देशों के बोर्ड प्रमुखों को मिलता रहता है। अब तक इस पद पर श्रीलंकाई बोर्ड के प्रमुख सिल्वा थे। नकवी साल 2027 तक इस पद पर बने रहेंगे। नकवी की अब पहली जिम्मेदारी एशिया कप के आयोजन की होगी। एशिया कप सितंबर में टी20 प्रारूप में ही खेला जाएगा। इसके आयोजन स्थल की घोषणा अभी होनी है।

नकवी ने एसीसी अध्यक्ष बनने पर सभी का आभार जताते हुए कहा कि मैं बेहद सम्मानित महसूस कर रहा हूं। नकवी ने कहा कि उनका लक्ष्य क्षेत्र में तेजी से विकास के लिए मिलकर काम करना रहेगा। उन्होंने कहा कि मैं खेल के विकास और वैश्विक प्रभाव को बढ़ाने के लिए सभी सदस्य बोर्ड के साथ काम करने को प्रतिबद्ध हूं। इस दौरान मेरा प्रयास सभी के साथ मिलकर नए अवसरों को खोजना रहेगा। , साथ ही कहा कि हम आपसी सहयोग को बढ़ावा देंगे और एशियाई क्रिकेट को ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। नकवी ने कहा कि मैं निवर्तमान एसीसी अध्यक्ष को भी उनके योगदान के लिए धन्यवाद देता हूं। एसीसी बैठक वर्चुअली आयोजित की गई थी। इसमें भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) का प्रतिनिधित्व उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने किया। वहीं निवर्तमान अध्यक्ष सिल्वा ने एसीसी सदस्यों के अलावा इसके पूर्व पमुख रहे भारत के जय शाह को भी धन्यवाद दिया। साथ ही कहा कि उनके नेतृत्व में एसीसी ने कई अहम उपलब्धियां हासिल की जिसमें एसीसी एशिया कप व्यावसायिक अधिकारों के लिए अब तक का सबसे अधिक मूल्य हासिल करना, नई कार्यक्रम संरचना शुरू करना और एशिया में क्रिकेट के निरंतर विकास का मार्ग प्रशस्त करना आदि है।

सोशल मीडिया में छायी केकेआर की प्रशंसक

मुम्बई, (ए.)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में खेले जा रहे मुकाबलों में प्रशंसक भी चर्चाओं में रहते हैं। इसी कड़ी में अब कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) की जर्सी पहने एक खूबसूरत महिला प्रशंसक भी सबके आकर्षण का केन्द्र बनी हैं। ये प्रशंसक सोशल मीडिया पर भी जमकर वायरल हो रही है। इस मैच में केकेआर की सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ जीत के दौरान प्रशंसक बेहद उत्साहित दिखे। इसी दौरान केकेआर की ये प्रशंसक सोशल मीडिया पर छायी रही। अब इस युवती को लेकर लोग सोशल मीडिया पर चर्चाओं में लगे हैं। उसे देखकर कई प्रशंसक तो दिवाने हो गये हैं और वीडियो और तस्वीर साझा कर उसके बारे में पूछ रहे हैं। इसी कड़ी कें एक प्रशंसक ने सोशल मीडिया में इस लड़की की दो तस्वीरें पोस्ट कर पूछा है कि ये कौन है? वहीं एक अन्य ने इसका वीडियो साझा कर लिखा, ये लड़की तो चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की प्रशंसक से भी ज्यादा खूबसूरत है। इससे पहले सीएसके की एक महिला प्रशंसक भी सबके आकर्षण का केन्द्र रही थी।

बर्थ-डे पार्टी में खुलेआम लहरायी गयीं तलवार, बांका, विरोध करने पर एक दर्जन से अधिक लोगों ने की मारपीट

झूठे मुकद्दमें में फंसाने की खुलेआम धमकी, पीड़ित ने लगाया सोने की चेन व नकदी छीन ले जाने के गंभीर आरोप

ललितपुर। पहली अप्रैल को देर रात डी.जे. पर तेज धमक के साथ गानों पर खुली तलवारें, फरसा व बांका इत्यादि लेकर लहराते हुये जमकर डांस किया गया। डीजे की आवाज कम करने की बात कहने पर दर्जन भर से अधिक लोगों द्वारा खुलेआम हथियार लहराते हुये झूठे मुकद्दमें में फंसाने के साथ-साथ हमलावर होने का मामला प्रकाश में आया है। प्रकरण में पीड़ित ने अगले दिन दर्जन भर से अधिक लोगों पर घर आकर मारपीट करने और जान से मारने के साथ ही सोने की चेन व 1500 रुपये छीन ले जाने का आरोप लगाया है। हालांकि खुलेआम लहराये गये हथियारों की वीडियोग्राफी होने के बावजूद भी इस के प्रकरण में पुलिस ने चुप्पी साध रखी है। शहर के मोहल्ला आजादपुरा लेडियापुरा देहरे मंदिर के पास रहने वाले मनोज कुमार ने पुलिस अधीक्षक को भेजे शिकायती पत्र में बताया कि 1 अप्रैल की रात करीब 11 बजे वह अपने परिवार समेत घर में था। तभी पड़ौस में रहने वाले कुछ लोग अपने साथ 15-20 अज्ञात लोगों के साथ हाथों में लाठी-डण्डा, तलवार, फरसा इत्यादि लेकर आये और गालियां देने लगे। विरोध करने पर उक्त लोगों ने उसके घर में घुसकर उसके व उसके परिजनों से मारपीट कर दी। आरोप है कि इस दौरान उक्त लोग उसके गले से सोने की चेन व 1500 रुपये भी छीन ले लिये और जान से मारने की धमकी देते हुये भाग गये। पीड़ित ने बताया कि उसने पूरे घटनाक्रम की वीडियो बना ली, जो कि उसके फोन में सुरक्षित है। मामले की शिकायत कोतवाली पुलिस से की गयी, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुयी। आगे बताया कि इसी बात से क्षुब्ध होकर अगले दिन सुबह करीब 8 बजे उक्त सभी लोग एक बार फिर एकराय होकर आये और गालियां देते हुये शिकायत करने पर जान से मारने को आमादा हो गये। पीड़ित ने बताया कि उक्त लोग काफी आपराधिक किस्म के लोग हैं और मोहल्ले में काफी आतंक बनाये हुये हैं, जिससे उनके परिवार को जानमाल का खतरा बना हुआ है। पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक से मामले की जांच करायी जाकर एफआईआर दर्ज कर उक्त लोगों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही किये जाने की गुहार लगायी है।

फर्जी विरासत दर्ज कराकर जमीन पर कब्जा करने का प्रयास

पीड़ित की तहरीर व कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने दर्ज किया मुकद्दमा

ललितपुर। थाना पाली क्षेत्रांतर्गत रहने वाले मनोज कुमार पुत्र तुलसीराम चौरसिया ने सीजेएम न्यायालय में वाद दायर किया है। बताया कि उसके चाचा जमनी पुत्र सुकसिंह के नाम संक्रमणीय भूमिधर जमीन थी। चाचा-चाची का काफी समय पहले स्वर्गवास हो गया था और चाचा का पुत्र रामचरन इन्दौर में निवासरत था। जिस कारण आराजी की देखभाल के लिए उसके पक्ष में रजिस्टर्ड मुख्तयारनामा खास अंकित था। चाचा की मृत्यु होने पर पण्डयाना मोहल्ले में रहने वाले रामदास व प्यारेलाल पुत्रगण परमानंद साहू ने जमीन हड़पने के उद्देश्य से फर्जी विरासत राजस्व अधिकारियों से सांठगांठ करके म.प्र. के जिला सागर अंतर्गत थाना खुरई के ग्राम बीरमखेड़ी निवासी राजाराम व कला कुशवाहा की फर्जी विरासत अभिलेखों में दर्ज करा दी गयी। जबकि उक्त लोग मृतक के कोई भी विधिक वारिसान नहीं है और न ही उक्त लोगों को मृतक की विरासत पाने का अधिकार था। किन्तु रामदास व प्यारेलाल साहू ने उक्त लोगों से मिलीभगत कर धोखाधड़ी से उक्त विरासत दर्ज करायी और रामदास व प्यारेलाल के द्वारा राजाराम व कला से आराजी का बैनामा अपने पक्ष में गैरकानूनी तरीके से करा लिया और अब उक्त आराजी पर जबरन कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है। विरोध करने पर उसे जान से मारने की धमकी दी जा रही है। मामले की सूचना पुलिस अधीक्षक व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों को दी गयी, लेकिन कार्यवाही न होने पर उसने विवश होकर न्यायालय की शरण ली है। न्यायालय के आदेश पर अब पुलिस ने उक्त लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 120 बी, 420, 467, 468, 471, 352, 504, 506 के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

आकस्मिक निधन पर नेमवि प्रबंध समिति व प्रशासन की शोकसभा सम्पन्न

ललितपुर। नेहरू महाविद्यालय में प्रबंध समिति के पदाधिकारियों/सदस्यों एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की शोकसभा सम्पन्न हुई। इसमें प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य भगवत दयाल सिंधी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया एवं ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई। सभा में शरद खैरा, विलास पटैरिया, प्रदीप चौबे, हरदयाल सिंह लोधी, अशोक गोस्वामी, आदित्य नारायण बबेले, रामेश्वर प्रसाद, हरीराम निरंजन, बब्बूराजा बुन्देला, महेश श्रीवास्तव, अशोक श्रीवास्तव, प्रदीप गुप्ता, उदित रावत, धर्मेन्द्र रावत, गिरीश पाठक, महेन्द्र पाराशर, महेश प्रसाद, रामबाबू गोस्वामी, वीरेन्द्र तिवारी, रामकृष्ण साहू, संतोष चैबे, अजय साईकिल, रघुवीरशरण तिवारी, अनूप ताम्रकार, ओमप्रकाश बिरथरे, गोविन्द व्यास, प्राचार्य प्रो.ओमप्रकाश शास्त्री, प्रो.आशा साहू, प्रो.अनिल सूर्यवंशी, हिमांशधर द्विवेदी, जितेन्द्र कुमार, डा.रोशन कुमार सिंह, डा.सुधाकर उपाध्याय, डा.सुभाष जैन, डा.संजीव शर्मा, डा.सूबेदार सिंह, डा.शैलेन्द्र सिंह, डा.रामकुमार रिछारिया, डा.लक्ष्मीकान्त मिश्रा, डा.अरिमर्दन सिंह, डा.विनीत अग्निहोत्री, संदीप श्रीवास्तव, डा.अनूप दीक्षित, डा.ऊषा तिवारी, श्वेता आनंद, डा.वर्षा साहू, डा.अभिलाषा साहू, डा.जगत कौशिक, डा.संतोष सिंह, इं.सौरभ श्रीवास्तव, इं.विपिन शुक्ला, डा.संतोष शुक्ला, डा.गीरेन्द्र सिंह, डा.दीपक पाठक, डा.प्रीति सिरोठिया, डा.रेनू चंदेल, डा.रजनी चौबे, डा.बलराम द्विवेदी, फहीम बख्श, अंकित चौबे, हरिप्रसाद, जयंत चौबे, श्रीपत सिंह, भरत सिंह, संजय शर्मा, कमलेश, राकेश, कामता, मिलन सेन, आकाश सोनी आदि उपस्थित रहे।

हाई-वे पर गुण्डागर्दी करने वाले दो बदमाशों को पकड़ा

बांसी (ललितपुर)। बुधवार की रात नेशनल हाईवे पर बीघा खेत टोल और उसके पास युवकों ने जमकर हंगामा काटा, कार पर पत्थर मारा और बाइक सवार दो युवकों की जमकर पिटाई की, पुलिस आरोपियों को पकड़ कर छोड़ा, पुलिस मामला सुलाटने में जुटी। बुधवार की रात करीब 11 बजे बांसी निवासी राहुल कुमार अपने दो साथियों के साथ बाइक से नेशनल हाईवे 44 पर बीघा खेत टोल प्लाजा से थोड़ी दूर पर स्थित प्राथमिक विद्यालय के सामने से निकल रहा था, कि उसी दौरान दूसरे बाइक से भिडंत हो गयी, दूसरी बाइक पर सवार युवक पास के ही गांव के थे। पास के गांव के युवकों ने अपने क्षेत्र का प्रभाव दिखाते हुए बांसी के इन बाइक सवार युवकों की जमकर धुनाई कर दी, किसी तरह जान बचाकर बचे इन युवकों की बाइक घबड़ाहट में डिवाइडर से टकरा गई, पहले ही मारपीट में लहुलुहान इन युवकों के सिर में गम्भीर चोटें आयी एक के सिर में 17 टाके आए वह अभी भी जिला अस्पताल में भर्ती है, अन्य दो युवक गुरुवार और शुक्रवार को उपचार के बाद अपने गांव बांसी आ गये हैं। पास के गांव के जिन युवकों ने इन लोगों के साथ मारपीट की थी वह टोल के पास आकर खड़े हो गये और वहां से गुजर रही एक कार पर पत्थर मारा जिसकी शिकायत डायल 112 पर कार वालों ने दर्ज करायी है। इतना उपद्रव करने के बाद भी इन युवकों का मन नहीं भरा और इसी दौरान ललितपुर से स्कूटी से बांसी आ रहे बांसी निवासी सचेन्द्र कुमार और अनेन्द्र कुमार की युवकों ने रोक कर जमकर पिटाई कर दी जिससे एक का कान कट गया दूसरे के हाथ और पीट में गम्भीर चोटें आई है। आधा घंटा चली इस मारपीट की घटना टोल के कैमरो में भी कैद है, सचेन्द्र ने बताया कि उनके साथ अकारण मारपीट होती रही लेकिन टोल पर मौजूद दर्जनों लोगों में कोई उन्हें बचाने नहीं आया। इस घटना की तहरीर सचेन्द्र कुमार ने पुलिस चौकी मंडी को दी, पुलिस ने आरोपियों को भी पकड़ लिया और चौकी में बैठाने के बाद छोड़ दिया। पुलिस मामले को सुलटाने में जुटी जबकि इन युवकों द्वारा हाइवे पर जमकर गुंडागर्दी की।

सिलेण्डर फटने से घर में लगी आग, आरएलडी के युवा जिलाध्यक्ष ने मदद का दिया आश्वासन

ललितपुर। ब्लॉक मड़ावरा अंतर्गत ग्राम गौना में गुरुवार को सुबह एक मकान में सिलेंडर फटने से मकान की परखच्चे उड़ गए। गनीमत यह रही की परिजनों ने समय रहते हुए वहां से भाग लिया, नहीं तो बहुत बड़ी घटना हो सकती थी, पर घर में रखा हुआ सामान तेल का कुप्पा, आटा, गेंहू, दीवार में बनी खिड़की में रखे पैसे सहित अन्य घरेलू सामान जलकर हुआ खाक हो गया। जब इसकी सूचना युवा राष्ट्रीय लोकदल के जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम कुशवाहा परशु भैया को मिली तो उन्होंने पीड़ित परिवार से मिलकर उनका हाल जाना। पीड़ित परिवार ने युवा राष्ट्रीय लोक दल के जिला अध्यक्ष को बताया कि गुरुवार सुबह चाय बनाते समय सिलेंडर ने आग पकड़ ली जिससे विस्फोट हो गया सिलेंडर फटने से जलकर राख हुआ गृहस्थी का सामान जिससे पीड़ित काफी परेशान है।पीड़ित की बातों को सुनकर युवा राष्ट्रीय लोक दल ने पीड़ित परिवार को आश्वासन देते हुए कहा है कि जिला प्रशासन से लेकर उत्तर प्रदेश सरकार तक आपकी बात को पहुंचाएंगे और आपकी जो भी आर्थिक सहायता की जाएगी।

बलवा ड्रिल कर शस्त्रों को चलाने का किया अभ्यास, साप्ताहिक परेड का निरीक्षण कर एसपी ने ली सलामी

ललितपुर। पुलिस अधीक्षक मो.मुश्ताक ने शुक्रवार को साप्ताहिक परेड का निरीक्षण कर सलामी ग्रहण की। परेड उपरान्त अभ्यास के दौरान पुलिसकर्मियों में से ही बलवाई बने लोगों (भीड़) को तितर-बितर करने हेतु बलवा ड्रिल के अंतर्गत कार्यवाही करायी कर पुलिसकर्मियों को दंगा-नियंत्रण उपकरण अश्रु गैस के गोले, टीयर स्मोक सेल, हैंड ग्रेनेड,डाई मार्कर, रबर बुलेट गन,एंटी राइट गन व टीयर गैस गन आदि शस्त्रों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी। बलवा ड्रिल का डिमॉस्ट्रेशन कराया कराकर प्रयोग के समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में भी अवगत कराया गया। बलवा ड्रिल के रिहर्सल के दौरान 09 पार्टियों में एलआईयू, सिविल पुलिस, फायर सर्विस, अश्रु गैस, लाठी पार्टी, फायर पार्टी, फर्स्ट एड, फोटो एवं वीडियोग्राफी, रिजर्व पार्टी का गठन कर रिहर्सल कराया गया। दंगा-नियत्रंण हेतु अमल में लाये जाने वाले सभी विधिक प्रावधानों एवं टैक्टिस का क्रमवार प्रशिक्षण एवं अभ्यास किया गया। तत्पश्चात पुलिस लाइन स्थित क्वार्टर गार्द, स्टोर, आर्मरी आदि का निरीक्षण कर शस्त्रों की साफ-सफाई व उचित व्यवस्थापन तथा संबंधित अभिलेखों को अपडेटेड रखने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया। यू.पी. 112 के वाहनों को चेक कर उसमें कार्यरत कर्मियों को निर्देशित किया गया कि इवेन्ट की सूचना पर शीघ्र-अतिशीघ्र पहुंचकर पीडित को हरसंभव मदद करें और पीड़ित के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार करना सुनिश्चित करें। परेड में शामिल पुलिस कर्मियों से उनकी समस्याओं को सुनकर सम्बन्धित को अविलम्ब निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया। डायल 112, परिवहन शाखा, स्टोर, पुलिस मेस, पुलिस स्नानागार, बारबर शॉप, बैरकों, पुलिस कैटींन एवं पुलिस लाइन की विभिन्न मदों को चेक कर उचित साफ- सफाई हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा- निर्देश दिये। आदेश कक्ष में अर्दली रुम के दौरान कर्मियों के प्रशिक्षण रजिस्टर, रिजर्व पुलिस लाइन्स की विभिन्न मदों के रजिस्टरों का अवलोकन कर संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। इस दौरान एएसपी अनिल कुमार, क्षेत्राधिकारी लाइन्स सुनील कुमार, क्षेत्राधिकारी तालबेहट अभय नारायण राय, क्षेत्राधिकारी महरौनी रक्षपाल सिंह, प्रतिसार निरीक्षक जगदीश चन्द्र व अन्य पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

कौमी एकता समिति ने पेश की चादर, हजरत बाबा सदन शाह की मजार लगा है उर्स

चादर चढ़ाकर मांगी अमन चैन की दुआ

ललितपुर। गुरुवार को ललितपुर में हिंदु-मुस्लिम एकता की मिशाल हजरत बाबा सदन शाह रहमतुल्लाह अलैह की मजार पर उर्स के मुबारक मौके पर कौमी एकता सेवा समिति के द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी चादर पेश की गई। बताते चलें कि प्रत्येक वर्ष बाबा की मजार पर 5 दिन का उर्स (मेला) लगता है। जहां पर 3 दिन कब्वाली और मुशायरा होता है और बाकी 1 दिन सम्मेलन, शादियां होती हैं। इस मौके पर लंगर (भंडारा) भी होता है जिसमें सभी लोग तवरुक (प्रसाद) ग्रहण करते हैं साथ ही बाहरी दुकानदार यहां आकर दुकानें और झूले लगाते हैं और स्थानीय लोग खरीदारी करते हैं। अकीदतमंद लोग बाबा की मजार पर हाजिरी लगाने जाते हैं और चादर पेश कर दुआएं मांगते हैं। गुरुवार 3 अप्रैल को ललितपुर की कौमी एकता सेवा समिति के द्वारा भी चादर पेश की गई। इस दौरान समिति अध्यक्ष परवेज पठान, लक्ष्मीनारायण विश्वकर्मा आचार्यजी, मकबूल राइन, आसिफ मंसूरी, धर्मेंद्र श्रीवास्तव, बलराम अहिरवार, इदु मंसूरी, आयुष सैनी, सचिन सोलंकी, रफीक अली आदि लोग उपस्थित रहे।

नगर पालिका की पार्किंग के नाम पर अवैध वसूली का आरोप, पार्षद की तहरीर पर आधा दर्जन लोगों पर एफआईआर दर्ज

ललितपुर। नगर पालिका परिषद से शहर में आने वाले वाहनों से पार्किंग के नाम पर जबरन की जा रही अवैध वसूली के खिलाफ आवाज उठाना पार्षद को मंहगा पड़ गया। पार्षद ने आधा दर्जन लोगों के खिलाफ रास्ते में रोककर ड्राईवर से जबरन अवैध वसूली करने और गालियां देते हुये मारपीट करने का आरोप लगाया है। हालांकि इस प्रकरण में पार्षद की ओर से दी गयी तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। तहरीर में वार्ड संख्या 15 से पार्षद मनमोहन चौबे ने बताया कि वह गुरूवार को सुबह करीब 8 बजे उसके निजी वाहन संख्या यू.पी.94 टी 5836 को लेकर उसका ड्राईवर सुमेर सिंह झांसी से गल्ला मण्डी की तरफ आ रहा था। तभी देवेन्द्र राजपूत पुत्र वीरन राजपूत, उसके साथी जाविद खान, रामबाबू साहू उर्फ राधे, आदर्श, दीपक राजा ने एकरा होकर बीच सड़क पर उनका वाहन जो कि ड्राईवर चला रहा था को रोक लिया और नगर पालिका की पार्किंग के नाम पर 100 रुपये मांगने लगे। बताया कि देवेन्द्र राजपूत के कहने लगा कि नगर पालिका की पार्किंग का ठेका उसके पास है। उन्होंने जब 31 मार्च 2025 को ठेका खत्म होने की बात कही तो उसके ड्राईवर से गालियां देते हुये मारपीट की गयी। पार्षद की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने उक्त लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2), 308 (4), 352 के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

संक्षिप्त समाचार

ऑफिस से हजारों रुपए का सामान पार

रायपुर,कासं.। अनुपम नगर खम्हारडीह स्थित ऑफिस का ताला तोड़कर अज्ञात चोर ने हजारों रुपए का सामान पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर खम्हारडीह पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी पिंकु घोष 39 वर्ष गोरखा कालोनी न्यू शांतिनगर का रहने वाला है। प्रार्थी ने खम्हारडीह थाना में शिकायत किया कि अज्ञात चोर ने उसके ऑफिस का ताला तोड़कर आलमारी में रखे कैमरा और हार्ड डिस्क पार कर दिया। चोरी गए जुमला कीमती करीब 95 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर खम्हारडीह पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

तालाब के पास खड़ी बाइक पार

रायपुर,कासं.। मठपारा स्थित चिरौंजी तालाब के पास खड़ी बाइक को अज्ञात चोर ने पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर टिकरापारा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी ओमप्रकाश देवांगन 38 वर्ष गभरापारा टिकरापारा का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 एचटी 4899 को मठपारा स्थित चिरौंजी तालाब के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दी। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 25 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर टिकरापारा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

सटोरिया चढ़ा पुलिस के हत्थे

रायपुर,कासं.। मोवा पुलिस ने हीरो आरसन मोटर्स के पास एक सटोरिया को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से 1 नग मोबाइल और नकदी 2100 रुपए जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार मोवा पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर हीरो आरसन मोटर्स शोरूम के पास दबिश देकर आईपीएल क्रिकेट मैच में सट्टा खिलाते आरोपी चितेश्वर दीवान 41 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इसके पास से 1 नग मोबाइल और नकदी 2100 रुपए जब्त किया है। मामले में पुलिस ने आरोपी के खिलाफ जुआ एक्ट के तहत कार्रवाई की है।

बस्तर पंडुम समापन समारोह में शामिल होंगे अमित शाह

रायपुर,कासं.। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह आज दो दिवसीय दौरे पर छत्तीसगढ़ पहुंच रहे हैं। इस दौरान वे बस्तर पंडुम समापन समारोह में भाग लेंगे और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर एक उच्चस्तरीय बैठक भी करेंगे। अमित शाह शुक्रवार रात 9:30 बजे रायपुर पहुंचेंगे और अगले दिन 5 अप्रैल को सुबह 10:50 बजे जगदलपुर के लिए रवाना होंगे। वे सुबह 11:30 बजे जगदलपुर पहुंचेंगे, जहां से वे सीधे दंतेवाड़ा जाएंगे, जहाँ माता दंतेश्वरी के दर्शन करेंगे।

रायपुर रेल मंडल में टिकट चेकिंग स्टाफके कार्यों की समीक्षा

-वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अवधेश कुमार त्रिवेदी ने टिकट चेकिंग स्टाफको यात्रियों के साथ सोम्य व्यवहार एवं त्वरित समस्या निदान पर जोर दिया

रायपुर, कासं.। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अवधेश कुमार त्रिवेदी ने रायपुर रेल मंडल में कार्यरत टिकट चेकिंग स्टाफके कार्यों की समीक्षा की ड्यूटी के दौरान आने वाली समस्याओं, सुरक्षा, सुविधाओं में विस्तार सहित कई मुद्दों पर विचार-विमर्श किया । रायपुर रेल मंडल में कुल 218 टिकट चेकिंग स्टाफहै पहली बैठक में 75 टिकट चेकिंग शामिल हुए आगामी दिनों में शेष टिकट चेकिंग स्टाफके कार्यों की भी समीक्षा की जाएगी । अवधेश कुमार त्रिवेदी ने टिकट चेकिंग स्टाफके द्वारा यात्रियों के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन करने, नियमानुसार यात्रियों को प्रदत्त की जाने वाली सुविधाओं के प्रति उनकी जिम्मेदारियों, उनके द्वारा कि जा रही रेल सेवा से यात्री संतुष्ट हो, यात्रियों को उन्नत सुविधा मिले, ट्रेन में यात्रा कर रहे यात्रियों के प्रति व्यवहार अच्छा रखेंगे तो भारतीय रेल की साख भी बनेगी इत्यादि विषयों पर गंभीरता से चर्चा की गई साथ ही टिकट चेकिंग स्टाफ द्वारा अपने कार्यों के दौरान आने वाली समस्याओं के निदान हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि उनकी समस्यायों को तत्काल सुलझाया जाए, उनको दिए जाने वाले सभी लाभों, भत्तो का समय पर भुगतान हो, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए । टिकट चेकिंग स्टाफ जब भी अपने मंडलों या अन्य रेलवे जोन एवं मंडलों में ड्यूटी समाप्त कर रेस्ट के लिय जाते हैं तो उन्हें वहां पर उचित रहन-सहन, रेस्ट हाउस में उचित खानपान की व्यवस्था सुनिश्चित हो इसका ध्यान रखे जाने की बात कही । साथ ही सभी टिकट चेकिंग स्टाफको अलर्ट किया कि यात्रियों को समस्या का अनुभव होने से पहले उन्हें स्वयं समस्या का आकलन कर लेना चाहिए और उसका तुरंत निदान करने हेतु उचित उपाय किए जाने चाहिए तुरंत कंट्रोल या अपने उच्च अधिकारियों को उस समस्या से अवगत करा कर तुरंत निदान कर रेल यात्रियों को बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध करा कर रेल सेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए । इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अवधेश कुमार त्रिवेदी के साथ सहायक वाणिज्य प्रबंधक अविनाश कुमार आनंद , मंडल मुख्य टिकट निरीक्षक ए. जेना, मुख्य वाणिज्य निरीक्षक टाटा बाबू सहित 75 टिकट चेकिंग स्टाफउपस्थित रहे।

लोन दिलाने के नाम पर करोड़ों की ठगी करने वाले 6 गिरफ्तार

रायपुर,कासं.। राजधानी की कोतवाली थाना पुलिस ने 250 से अधिक लोगों को लोन दिलाकर उनके लोने की आधी रकम को अपने फर्म में जमा करवाकर लोगों से करोड़ों रूपयों की ठगी करने वाले फर्म आरवी ग्रुप के खिलाफ वित्तीय धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। मामले में पुलिस ने दो महिलओं सहित 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने राजधानी रायपुर के डीएम प्लाजा स्थित आरवी ग्रुप एवं स्पाश एडवाईजर प्राईवेट लिमिटेड द्वारा की गई व्यापक वित्तीय धोखाधडी का खुलासा किया है। इस मामले में मुख्य आरोपी अभय कुमार गुप्ता (उर्फअमयकांत गुप्ता) सहित छह लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इस धोखाधड़ी में 250 से अधिक लोगों को फर्जी लोन स्कीम में फंसाकर करोड़ों की ठगी की गई। जिससे कुल ठगी की राशि 50 करोड़ रुपये से अधिक होने की संम्भावना है। उक्त कार्यवाही एक पीड़ित व्यक्ति द्वारा शिकायत किये जाने के बाद की गई। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि आरोपियों ने पहले लोन दिलाने के नाम पर उनके दस्तावेज एकत्र किए और बैंक के साथ सांठगांठ कर उसके नाम पर 72,15,399 रुपये के लोन मंजूर करवाए और 50 प्रतिशत रकम निवेश के नाम पर अपने फर्म में जमा करवा ली और बाद में, उन्हें आश्वासन दिया गया कि लोन की 50 प्रतिशत राशि आरवी ग्रुप फर्म में निवेश करने पर उनकी ईएमआई फर्म द्वारा स्वतः भरी जाएगी। शुरू में कुछ महीनों तक मासिक किस्तें जमा कर विश्वास बढ़ाया गया, लेकिन बाद में भुगतान रोक दिया और ग्राहकों के फोन कॉल और शिकायतों को अनदेखा किया गया। उपरोक्त प्रकरण को पुलिस महानिरीक्षक रायपुर अमरेश मिश्रा, उमनि एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, रायपुर डॉ लाल उमेद सिंह द्वारा गंभीरता से लेते हुये तत्काल आरोपीगणो की पता तलाश एवं गिरफ्तारी किये जाने हेतु टीम गठित कर संभावित स्थानो पर टीम रवाना की जिसके फ्लस्वरुप आरोपीगण जो कि गबन कर विदेश भागने की फिराक में थे, पुलिस की गिरफ्त में आ गये।

नर्सिंग छात्रा का गंभीर आरोप, प्रिंसिपल ने धर्मांतरण के लिए किया मानसिक रूप से प्रताड़ित

-कलेक्टर और एसपी को ज्ञापन सौंप लगाई न्याय की गुहार

जशपुर-रायपुर। कुनकुरी स्थित हॉलीक्रॉस नर्सिंग कॉलेज एक गंभीर विवाद में घिर गया है, जहां की एक हिन्दू छात्रा ने कॉलेज की प्रिंसिपल सिस्टर विंसी जोसेफपर धर्मांतरण का दबाव डालने और मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है। छात्रा का कहना है कि जब उसने ईसाई धर्म अपनाकर नन बनने से इंकार किया, तो उसे न केवल हॉस्टल से निकाल दिया गया बल्कि कॉलेज परिसर में प्रवेश तक से रोक दिया गया।पीड़िता के अनुसार, उसने कॉलेज में फर्स्ट ईयर में दाखिला लिया था और लगभग तीन महीने बाद से ही प्रिंसिपल द्वारा उस पर लगातार धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया जाने लगा। जब उसने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया, तो उसके साथ भेदभाव शुरू हो गया। अब वह छात्रा फाइनल ईयर में है और आरोप लगाती है कि 1 अप्रैल 2024 को उसे हॉस्टल से निकाल दिया गया और कॉलेज के अंदर भी आने नहीं दिया गया। छात्रा ने यह भी बताया कि प्रबंधन ने उसे वार्षिक परीक्षा से वंचित करने की कोशिश की। जब उसने उच्च अधिकारियों से शिकायत करने की चेतावनी दी, तब जाकर उसे परीक्षा में बैठने दिया गया, लेकिन प्रैक्टिकल परीक्षा से बाहर करने का प्रयास किया गया।

इस पूरे घटनाक्रम को लेकर छात्रा ने जशपुर कलेक्टर और एसपी को ज्ञापन सौंपते हुए न्याय की गुहार लगाई है। उसने मांग की है कि कॉलेज प्रबंधन, विशेष रूप से प्रिंसिपल विंसी जोसेफ के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। वहीं, इस मामले में प्रिंसिपल विंसी जोसेफ ने छात्रा के सभी आरोपों को खारिज करते हुए उन्हें बेबुनियाद बताया है। इस प्रकरण को लेकर जिले में आक्रोश फैल गया है।

बिरगांव नगर निगम में बजट भाषण के दौरान हंगामा

रायपुर। बिरगांव नगर निगम में बजट भाषण के दौरान बवाल खड़ा हो गया। बजट भाषण के दौरान विपक्षी पार्षदों ने महापौर महापौर नंदलाल देवांगन पेश के टेबल पर पानी उढ़ेल दिया। जिसके बाद सामान्य सभा में महौल गरमा गया।

महापौर नंदलाल देवांगन 2025-26 का बजट पेश कर रहे थे। इसी दौरान विपक्ष के पार्षदों ने उनके टेबल पर कैन से पानी डाल दिया और महापौर मुर्दाबाद के नारे लगाए. बता दें, गुरुवार को बिरगांव नगर निगम में महापौर ने 149 करोड़ रुपयों का बजट पेश किया। इस बीच विपक्ष के पार्षद गर्मी में पानी की समस्या को लेकर आक्रोशित थे।

नशा मुक्त भारत अभियान की गतिविधियों के लिये वार्षिक कैलेण्डर बनाएँ : कलेक्टर श्रीमती चौहान

जिला स्तरीय समिति की बैठक में दिए निर्देश, नशे का अवैध कारोबार करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई पर दिया जोर

ग्वालियर। नशा मुक्त भारत अभियान को जिले में प्रभावी ढंग से मूर्तरूप देने के लिये गतिविधियों का एक वर्षीय कैलेण्डर तैयार करें। साथ ही सभी गतिविधियों को इस प्रकार से अंजाम दें, जिससे सार्थक परिणाम सामने आएं। इस आशय के निर्देश कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने नशा मुक्त भारत अभियान के तहत गठित जिला स्तरीय समिति की बैठक में संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय एवं अन्य संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने मादक पदार्थों की अवैध बिक्री में लिप्त तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने पर बल दिया। साथ ही कहा कि कार्रवाई के साथ-साथ नशे के खिलाफ जन जागरूकता कार्यक्रम भी प्रभावी ढंग से चलाए जाएं। श्रीमती चौहान ने कहा कि नशा मुक्ति अभियान के तहत होने वाली कार्रवाई की हर माह चौथी टीएल बैठक में समीक्षा की जायेगी। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार भी मौजूद थे।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने निर्देश दिए कि ग्वालियर शहर सहित जिले में ऐसे स्थलों को चिन्हित कर सख्त कार्रवाई करें, जहाँ पर अवैध रूप से मादक पदार्थों की बिक्री की जाती है। उन्होंने शिक्षण संस्थाओं के आसपास विशेष ध्यान रखने पर जोर दिया। साथ ही सहायक आबकारी आयुक्त को निर्देश दिए कि महाविद्यालयों के समीप स्थित ढाबों पर छापामार कार्रवाई कर यह सुनिश्चित करें कि यहाँ पर अवैध रूप से बीयर व शराब की बिक्री न हो। उन्होंने यह भी कहा कि आबकारी विभाग के अमले को नार्कोटिक्स विंग से संबंधित प्रशिक्षण भी दिलाया जाए, जिससे विभागीय अमला नार्कोटिक्स से संबंधित आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई के लिये मजबूत प्रकरण तैयार कर सकें। बैठक में कलेक्टर श्रीमती चौहान ने यह भी निर्देश दिए कि मेडीकल स्टोर से बगैर डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन के ऐसी दवायें न बिकें जिनका उपयोग नशे के लिये किया जा सकता है। इसके लिये ड्रग इंस्पेक्टर द्वारा लगातार मेडीकल स्टोरों की जांच की जाए। उन्होंने तम्बाकू नियंत्रण के जिला नोडल अधिकारी को भी सार्वजनिक स्थल पर तम्बाकू, गुटखा व सिगरेट का उपयोग करने वालों के खिलाफ लगातार अर्थदण्ड की कार्रवाई करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने नशा मुक्ति अभियान के तहत की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी फोटोग्राफ सहित निर्धारित एप पर अपलोड करने के निर्देश भी दिए। साथ ही सहायक आयुक्त जनजाति कल्याण विभाग को छात्रावासों का निरीक्षण कर यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी नशे की प्रवृत्ति से दूर रहें। शुक्रवार को कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित हुई बैठक में अपर आयुक्त नगर निगम श्री मुनीष सिकरवार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री निरंजन शर्मा, प्रभारी संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय श्री नरेश गुप्ता, सहायक आबकारी आयुक्त श्री राकेश कुर्मी तथा समिति के अन्य सदस्यगण मौजूद थे।

ड्रग्स के लिहाज से हॉट स्पॉट चिन्हित कर लगातार कार्रवाई पर जोर

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने कहा ग्वालियर सहित सम्पूर्ण जिले में ऐसे हॉट स्पॉट चिन्हित करें जहाँ पर नशे के अवैध कारोबार में लिप्त लोग अक्सर पकड़े जाते रहे हैं। इन हॉट स्पॉट पर लगातार छापामार कार्रवाई कर दोषियों को जेल भेजें। उन्होंने कहा ऐसी मैपिंग भी करें कि किस क्षेत्र में किस प्रकार के नशा करने वाले अक्सर पकड़े जाते हैं, जिससे इन क्षेत्रों में प्रभावी कार्रवाई के साथ-साथ जन जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा सके।

व्यापक स्तर पर चलाएँ जन जागरूकता गतिविधियाँ

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने कहा नशे की प्रवृत्ति के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के लिये व्यापक स्तर पर जन जागरूकता गतिविधियां चलाई जाए। उन्होंने खासतौर पर महाविद्यालयों, आठवीं कक्षा से ऊपर के स्कूलों बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर नशे के खिलाफ जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने के लिये कहा। साथ ही शिक्षण संस्थाओं में नशे के दुष्प्रभावों पर केन्द्रित निबंध, चित्रकला, वाद-विवाद जैसी प्रतियोगितायें आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सहायक आयुक्त आबकारी से कहा कि इन सभी स्थलों पर शराब से होने वाले नुकसान पर केन्द्रित बैनर भी लगवाएं। जन जागरण गतिविधियों में खिलाड़ियों व आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का भी सहयोग लें। कलेक्टर ने सहायक आबकारी आयुक्त से कहा कि 21 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को मदिरा नहीं दी जा सकती। जिले की सभी मदिरा दुकानों को इस बात के लिये स्पष्ट रूप से ताकीद कर दें।

धर्म गुरूओं के माध्यम से लोगों को दिलवाएँ नशा न करने का संकल्प

विभिन्न धार्मिक आयोजनों में धर्म गुरूओं के माध्यम से लोगों को नशा न करने का संकल्प दिलवाने के लिये भी कलेक्टर ने कहा। उन्होंने कहा कि संतजनों व धर्मगुरूओं द्वारा दिलाए जाने वाले संकल्प को लोग मानते हैं, इसलिये इस काम को प्रमुखता से कराएं।

कायाकल्प योजना से शहरी बस्तियों में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार जारी : मंत्री श्री कुशवाह

मंत्री श्री कुशवाह ने वार्ड-39 में कन्याओं से कराया विकास कार्यों का भूमिपूजन

ग्वालियर। शहरों के विकास को गति देने के लिये चलाई जा रही कायाकल्प योजना से पिछड़ी बस्तियों में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार शहरी बस्तियों के विकास के लिये कायाकल्प योजना के तहत लगातार धनराशि उपलब्ध करा रही है। यह बात उद्यानिकी, खाद्य प्रसंस्करण, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने ग्वालियर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत वार्ड-39 में विकास कार्यों के भूमिपूजन के दौरान कही। उन्होंने स्थानीय कन्याओं से इन विकास कार्यों का भूमिपूजन कराया। मंत्री श्री कुशवाह ने शुक्रवार को वार्ड-39 के अंतर्गत ढोलीबुआ पुल के समीप स्थित विभिन्न गलियों में लगभग एक करोड़ पाँच लाख रूपए की लागत से डलने जा रही पेयजल लाइन एवं सीसी रोड़ के निर्माण के लिये भूमिपूजन किया। इसी कड़ी में उन्होंने एबी रोड बजरिया में 12 लाख रूपए की लागत से बनने वाली सीसी रोड का भूमिपूजन भी कराया। इस अवसर पर जीडीए के पूर्व अध्यक्ष श्री रविन्द्र सिंह राजपूत, पार्षद श्रीमती अंजली राजू पलैय, पार्षद श्री मोहित जाट तथा सर्वश्री सत्यपाल जादौन, अलबेल सिंह घुरैया व श्री राकेश माहौर सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित थे।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने किया जिला कोषालय का निरीक्षण

ग्वालियर। कलेक्ट्रेट स्थित जिला कोषालय का कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने शुक्रवार को निरीक्षण किया। नया वित्तीय वर्ष आरंभ होने के बाद किए गए इस निरीक्षण में उन्होंने कोषालय के स्ट्रांग रूम सहित अन्य विभाग द्वारा वित्तीय लेनदेन से संबंधित प्रक्रिया देखी। उन्होंने कोषालय की व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर जिला कोषालय अधिकारी श्री अरविंद शर्मा सहित विभाग के अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

यातायात को अवरूद्ध कर रहे हाथ ठेले वालों को हटाया, किया सामान जब्त

ग्वालियर। नगर निगम के मदाखलत अमले द्वारा सुगम यातायात एवं नागरिकों की सुविधा के लिए निरंतर अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा रही है। मदाखलत अधिकारी श्री शैलेंद्र सिंह चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि निगमायुक्त श्री सिंघ प्रिय के निर्देशानुसार उपायुक्त सत्यपाल सिंह चौहान के निर्देशन में शहर में सुगम यातायात हो इसके लिए प्रतिदिन यातायात में बाधक अतिक्रमण को हटाने की कार्यवाही की जा रही है। जिसके तहत आज प्राप्त शिकायत के आधार पर जनकगंज हॉस्पिटल के सामने मुख्य मार्ग पर यातायात अवरुद्ध कर रहे हाथ ठेले वालों को जप्त कर मदाखलत कार्यालय भेजा गया।

साथ ही सख्त हिदायत दी गई कि निर्धारित सीमा के बाहर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण न किया जावे । उक्त कार्यवाही में मदाखलत निरीक्षक श्री सुघर सिंह एवं दल (दक्षिण) उपस्थित रहा।

सभी बिजली कंपनियों में स्वास्थ्य बीमा योजना लागू करने का निर्णय

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने की बिजली कंपनियों के कार्यों की समीक्षा

भोपाल। सभी बिजली कंपनियों में कार्यरत अधिकारी-कर्मचारियों के लिये स्वास्थ्य बीमा योजना लागू की जायेगी। यह कार्यवाही समय-सीमा में पूरी करें। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह निर्देश शुक्रवार को मंत्रालय में बिजली कंपनियों के कार्यों की समीक्षा के दौरान दिये।

टारगेट ओरिएंटेड करें कार्य

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि पूरे वर्ष का टारगेट तय करें और उसी अनुरूप कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि मैं त्रैमासिक समीक्षा करूंगा। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि निर्धारित मापदंड के अनुसार कार्य करने वाले अधिकारियों को प्रोत्साहित किया जायेगा। साथ ही मापदंड अनुसार काम नहीं करने वाले अधिकारियों को दंडित किया जायेगा। इसी के आधार पर स्थानांतरण और पदोन्नति भी तय की जायेगी।

जल्द पूरी करें भर्ती प्रक्रिया

मंत्री श्री तोमर ने कहा कि जनरेशन कंपनी और ट्रांसमिशन कंपनी का नया ओ.एस. (संगठनात्मक संरचना) स्वीकृत हो चुका है। अतः भर्ती की प्रक्रिया जल्द पूरी करें। उन्होंने बिजली कंपनियों द्वारा गत वित्तीय वर्ष में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिये बधाई भी दी। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि सभी कंपनियों की भर्ती एवं सेवा की शर्तें एक समान होनी चाहिए। आउटसोर्स कर्मचारियों का भी ईपीएफ जमा होना चाहिए। ऐप के माध्यम से कर्मचारी ईपीएफ की जानकारी ले सकते हैं।

पीएम जन-मन और धरती आबा में स्वीकृत कार्य समय-सीमा में पूरा करें

मंत्री श्री तोमर ने कहा कि पीएम जन-मन और धरती आबा योजना में स्वीकृत कार्यों को समय-सीमा में पूरा करें। जन-मन योजना में 27 हजार 230 घरों में विद्युत कनेक्शन देने का लक्ष्य है। इसमें 17 हजार 739 घरों में विद्युत कनेक्शन दिये जा चुके हैं। तीनों विद्युत वितरण कंपनियां लॉइन लॉसेस कम करने के लिये सुनियोजित कार्ययोजना बनाएं। खराब ट्रांसफार्मर समय पर बदलें। न्यायालयीन प्रकरणों में सरकारी पक्ष मजबूती से रखें। विद्युत कटौती और मेंटेनेंस की जानकारी सोशल मीडिया में भी दें। उन्होंने आरडीएसएस योजना में स्वीकृत कार्यों की भी समीक्षा कर जरूरी निर्देश दिये। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि हम सब अधिकारी-कर्मचारी होने के साथ ही एक नागरिक भी हैं। अतः हमारा सामाजिक दायित्व भी है। इसका निर्वहन निष्ठा के साथ होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गत वर्ष एक लाख पौधे लगाये गये थे, इनकी सुरक्षा की चिंता करें। साथ ही आगामी बरसात में पौध-रोपण की कार्ययोजना भी बना लें। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई ने विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि 15 अप्रैल तक नये वित्तीय वर्ष की कार्ययोजना अनिवार्य रूप से बना लें। बैठक में एमडी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी श्री अविनाश लवानिया, एमडी मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी श्री क्षितिज सिंघल, एमडी पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी श्री अनूप सिंह, एमडी

मेगा स्वास्थ्य शिविर में 27 में स्वय सेवकों ने दी सेवाएं

मुरैना,कांस। मुरैना रोटरी मेडिकल मिशन के अंतर्गत 26 मार्च 2025 से 2 अप्रैल 2025 तक आयोजित मेगा स्वास्थ्य शिविर में कलेक्टर एव डिप्टी कलेक्टर बीरेन्द्र कटारे के आदेश से एव नेहरू युवा केंद्र मुरैना की जिला युवा अधिकारी श्रीमती नेहा जादौन श्री दिलीप सुमन के मार्ग दर्शन मे कार्य किया 27 स्वयंसेवकों ने दवा वितरण काउंटरों पर मरीजों को दवा दिलवाने में प्रतिदिन सेवा कार्य किया 27 सदस्यों के दाल का नेतृत्व नेहरू युवा केंद्र मुरैना के रामविलास शर्मा जिन्होंने दिन भर अपने दल के साथ शिविर में उपस्थित रहकर मरीजों की सेवा कार्य किया दल में ग्रुप लीडर निरंजन दुबे मुरैना से अनन्या जोरा एवं अमन भदोरिया पोरसा से अपने दल के साथ दवा काउंटर पर सेवा कार्य किया दाल में अन्य सदस्य ज्योती गोड आयुषी शर्मा केदार शर्मा अभिषेक गोस्वामी दीपक शर्मा जितेन्द्र परीक्षत शर्मा विनोद कुशवाह दीपक कुशवाह शहनाज रजनी लोधी मीरा चौरसिया सुनील गुर्जर ध्रुव गुर्जर दीपेन्द्र कषाना हरिओम शर्मा दीपेश शर्मा कुलदीप शर्मा सुरेंद्र कुमार दीपक गुर्जर शिवम बघेल योगेन्द्र शर्मा शुशाक प्रजापति शिविर मे सहयोग प्रदान करने बाले वोलेटियर को कलेक्टर द्वारा सभी को प्रमाण पत्र प्रदान किये।

विद्यार्थी परिषद ने DEO के चैंबर में 2 घंटे नारेबाजी की, विद्यार्थी परिषद ने DEO का किया घेराव

मुरैना,कांस। विद्यार्थी परिषद ने मांग कि की जिले भर में चल रही प्राइवेट स्कूलों द्वारा महंगी किताबें और यूनिफॉर्म जबरन थोपना से अभिभावकों पर आर्थिक बोझ बढ़ रहा है ।कई स्कूल एनसीईआरटी की सस्ती और गुणवत्तापूर्ण किताबों के बजाय महंगे प्रकाश को की किताबें खरीदने के लिए दबाव बना रहे हैं जिससे आम परिवारों को परेशानी होती है इसके अलावा हर साल अनावश्यक फीस वृद्धि से भी छात्र-छात्रा और उनके परिवारों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है विद्यार्थी परिषद डीईओ महोदय के द्वारा मांग करती है की शिक्षा के नाम पर हो रहे व्यवसायीकरण को रोका जाए और पारदर्शी शुल्क नीति लागू की जाए और साथ ही विद्यार्थी परिषद इस विषय पर शीघ्र ही एक जन जागरण अभियान शुरू करेगी शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान का प्रसार करना है ना कि इस लाभ कमाने का साधन बनाना ,विद्यार्थी परिषद मांग करती है की निजी स्कूलों में केवल एनसीईआरटी या राज्य शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित किताबों को लागू किया जाए स्कूलों द्वारा जबरन किसी खास है प्रकाशक की महंगी किताबें की बाध्यता समाप्त की जाए । अतः विद्यार्थी परिषद ने जिले में पुस्तक मेला का आयोजन करने की मांग की ओर एक निश्चित मूल्य पर पुस्तकों को वितरण किया जाए ।

जल गंगा संवर्धन अभियान 2025

खिरावली तालाब की साफ-सफाई कराई गई

मुरैना,कांस। जल संसाधन विभाग मुरैना द्वारा 04 अप्रैल को मुरैना जनपद के ग्राम खिरावली के तालाब पर जल गंगा संर्वधन अभियान 2025 के तहत तालाब के बंड की साफ-सफाई का कार्य जन भागीदारी/जन सहयोग से किया गया। जल संसाधन संभाग मुरैना के कार्यपालन यंत्री श्री पीएस जाटव एवं संबंधित अनुविभागीय अधिकारी, उपयंत्री तथा गणना समन्वय और ग्रामीणों तथा विभागीय मैदानी कर्मचारियों ने उपस्थित होकर श्रमदान किया। कार्यक्रम में श्री पीएस जाटव द्वारा नागरिकों को जल गंगा संवर्धन के तहत जल की महत्ता एवं जल स्त्रोतों, संसाधनों के रखरखाव, इनके संरक्षण पर जोर देते हुए इस धरोहर को बचाने हेतु जागरूक किया।

महामंडलेश्वर आचार्य श्री सिया बल्लभ दास वेदांती जी महाराज 6 अप्रैल को मुरैना आऐंगे

मुरैना,कांस। संस्कार धानी जबलपुर के कटाव सिद्ध पीठ के पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर आचार्य श्री सिया बल्लभ दास वेदांती जी महाराज का 6 अप्रैल को मुरैना आगमन है वह प्रातः महाकौशल एक्सप्रेस से मुरैना पधारेंगे मुरैना में वह रघुराज सिंह सिकरवार बरिष्ठ पत्रकार मध्य राज्य, श्योपुर एक्सप्रेस वनखंडी रोड़ यहां मुरैना के यहां ठहरेंगे वह शिष्य परिकर को दर्शन देंगे सभी शिष्य गण सूचित हो।

सुमावली विधानसभा मुरैना ग्रामीण मंडल की कामकाजी बैठक

मुरैना कांस। सुमावली विधानसभा में ग्रामीण मंडल की कामकाजी बैठक आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिला अध्यक्ष कमलेश कुशवाहा ने संबोधित किया तथा मुख्य वक्ता के रूप में रामेश्वर सिंह गुर्जर एवं सहकारिता प्रकोष्ठ प्रदेश सह.संयोजक ब्रजकिशोर दंडोतिया, जिला कार्यालय मंत्री राजेश सिकरवार किसान मोर्चा पूर्व जिलाध्यक्ष राजेश शर्मा सिकरौदा,भाजपा नेता पान सिंह बघेल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष अजीत गुर्जर ने की आभार व्यक्त मंडल महामंत्री राधावल्लभ दंडोतिया द्वारा किया इस अवसर पर मंडल के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी, मंडल महामंत्री राधावल्लभ दंडोतिया, मदन लिखरवार,युवा मोर्चा जिलाउपाध्यक्ष किशोर शर्मा, मनोज उपाध्याय, डॉ.जनक सिंह कुशवाह अनिल शर्मा, निरजन शर्मा, युवा मोर्चा मंडल महामंत्री आकाश रजक,नेमीचंद शर्मा, राकेश नागर,अजय सोलंकी, श्रीनिवास डंडोतिया, श्रीमती सपना जाटव, रामबरन बघेल,राजेंद्र गुर्जर,वासुदेव सिंह, बंटी पटेल, गिरधारी सिंह डंडोतिया, मुरारी लाल शर्मा, गौरी शंकर डडोत्तिया सरपंच, शंकर सिंह पटेल, रामवीर सिंह कुशवाह, मुकेश दंडोतिया, बंटी दंडोतिया, नरपाल सिंह बघेल, रामबरन जाटव, राकेश यादव, बृजमोहन कंसाना, श्री कृष्णा कुशवाह, विकास दंडोतिया, विष्णु बघेल, एवं ज्येष्ठ श्रेष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मलेरिया से बचने के लिये आवश्यक उपाय करें

मुरैना,कांस। मलेरिया बुखार में व्यक्ति को ठंड के साथ कपकपी, तेज बुखार, पसीना आना और तापमान कुछ समय में सामान्य हो जाता है। मलेरिया एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता है। यह संक्रमित मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है। संक्रमण की अवधि, मलेरिया के प्रकार, उपचार की प्रभावशीलता और व्यक्ति के आधार पर भिन्न हो सकती है। जांच और इलाज द्वारा ठीक हो जाता है। यह जानकारी सिविल सर्जन डॉ. गजेन्द्र सिंह तोमर ने दी है।

मलेरिया के लक्षण

तेज सिर दर्द, हाथ पैरो में अकड़न, उल्टी आना, थकान महसूस होना ऐसे लक्षण दिखाई देने पर तुरंत डॉक्टर को दिखायें और जांच व उपचार करायें। डिप्टी मीडिया ऑफीसर श्रीमती रामलील माहौर ने मलेरिया से बचने की सलाह दी है।

जिसमें मलेरिया से बचने के लिये सभी अपने घर और बाहर सफाई रखें। पानी की टंकी को धोकर व सुखाकर पानी भरे। फुलअस्तीन के कपड़े पहने, मच्छरदानी लगायें, मच्छर पनपने वाली जगह को साफ-सुथरा रखें। आरएमओ डॉ. डीएस यादव ने आमजन से अपील की है कि मौसम के अनुसार मच्छरों से बचाव व उपचार अवश्य लें, जिससे मलेरिया से बचाव हो सके।

लोकसेवा केंद्र के मरम्मत कार्य में घटिया सामग्री का उपयोग

विजयपुर। विजयपुर में लोक सेवा केंद्र में चल रहे मेंटेनेंस के काम में घटिया सामग्री का उपयोग हो रहा है। श्री राम कंपनी की सीमेंट और बिना रॉयल्टी की चंबल की रेत का उपयोग ठेकेदार द्वारा किया जा रहा है। लोक सेवा केंद्र के कर्मचारी आरिफ खान की देखरेख में यह कार्य चल रहा है जबकि पूर्व कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड़ द्वारा एक शिकायत के आधार पर कर्मचारी आरिफ खान की सेवा समाप्त कर दी गई थी।वही आरिफ खान पुनःअपनी मनमानी के चलते लोक सेवा केंद्र में अपनी मनमानी कर रहा है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रस्तावित भ्रमण को दृष्टिगत रखते हुए करें पुख्ता तैयारियां : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने आनंदपुर धाम में प्रस्तावित भ्रमण की तैयारियों का लिया जायजा

भोपाल,ब्यूरो। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अशोकनगर के ईसागढ़ स्थित आनंदपुर धाम में 11 अप्रैल 2025 को प्रस्तावित भ्रमण की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने हेलीपैड स्थल, सुरक्षा व्यवस्था, रूट चार्ट, मंदिरों के दर्शन स्थल, पूजा स्थान तथा सत्संग स्थल का निरीक्षण कर जानकारी ली। साथ ही अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने आनंदपुर धाम स्थित श्री परमहंस अद्वैत मत, श्री आनंद शांति कुंज, श्री आनंद शांति भवन, श्री आनंद सरोवर एवं श्री आनंद शांति धाम पहुंचकर दर्शन किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री आनंदपुर धाम स्थित मंदिरों में पहुंचकर पूजा-अर्चना की। उन्होंने श्री आनंद सरोवर के पवित्र जल में पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद लिया और प्रसाद ग्रहण किया। उन्होंने श्री आनंदपुर धाम की महिमा को गरिमामय बताते हुए कहा कि यहां पहुंचने पर सुखद अनुभूति होती है।

बैसाखी पर लगेगा वार्षिक मेला

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैसाखी पर लगने वाले वार्षिक मेले में आने वाले अनुयायियों एवं दर्शनार्थियों के लिये सभी आवश्यक व्यवस्थाएं बेहतर करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि श्री आनंदपुर सत्संग आश्रम श्री परमहंस अद्वैत मत का भक्ति परमार्थ का प्रमुख केन्द्र तथा एक महान तीर्थ स्थल एवं अथाह ज्ञान व आत्मिक विद्या का अतुलनीय भंडार है।

यहां पर श्री आनंद सरोवर की तरल छटा निराली है तथा परिधि में पूजा स्थलों का अनोखा संगम है। इस पवित्र स्थल पर आकर मन को शांति तथा आत्म ज्ञान को बल मिलता है। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा एवं प्रभारी मंत्री श्री राकेश शुक्ला, विधायक चंदेरी श्री जगन्नाथ सिंह रघुवंशी, विधायक मुंगावली श्री बृजेंद्र सिंह यादव, पूर्व विधायक अशोकनगर श्री जजपाल सिंह जज्जी, श्री आलोक तिवारी सहित जनप्रतिनिधि, ट्रस्ट के महात्मा, अनुयायी एवं पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी उपस्थित थे।

विद्यार्थी स्वयं को तपाकर जीवन में प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता है : मंत्री श्री पटेल

विद्यार्थियों को नि :शुल्क पाठ्य-पुस्तकों का किया वितरण

भोपाल,ब्यूरो। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 के कैलेंडर सत्र के अनुसार स्कूल अब जुलाई के बजाय अप्रैल में खुलने लगे हैं। गर्मी का यह समय जरूर है लेकिन विद्यार्थी के लिए यही तप का समय है जो आपको जीवन में प्रगति के पथ पर लेकर जाएगा।पहले के समय में बच्चे टाट पट्टी पर बैठकर पढ़ाई करते थे, अब जो संसाधन स्कूलों में उपलब्ध है वह उस दौरान नहीं हुआ करते थे। समय के साथ बदलाव हुआ है। मंत्री श्री पटेल जिले के गोटेगांव विकासखंड के अंतर्गत आने वाले पीएम श्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खमरिया एवं शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय गोटेगाँव में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री पटेल ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी चौ. जुगल सिंह पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उन्होंने ने विद्यार्थियों को निश्शुल्क पाठ्य- पुस्तकों का वितरण किया। इस अवसर पर पूर्व राज्यमंत्री श्री जालम सिंह पटेल, पूर्व विधायक श्री हाकम सिंह चढ़ार, अन्य जनप्रतिनिधि, जिला शिक्षा अधिकारी श्री अनिल व्यौहार, अधिकारी-कर्मचारी, विद्यार्थी, अभिभावक व गणमान्य नागरिक मौजूद थे। कार्यक्रम में मंत्री श्री पटेल ने विद्यार्थियों से कहा कि जो मन में सवाल हो वह पूछे। कक्षा 12 वीं की छात्रा सोनम बर्मन ने मंत्री श्री पटेल से उनके मंत्री पद तक के सफर के बारे में पूछा तो वहीं छात्रा निशा लोधी ने बोलने में आत्मविश्वास कैसे लाए यह प्रश्न किया। मंत्री श्री पटेल ने अपने विद्यार्थी जीवन से लेकर कॉलेज और इस दौरान राजनीति से उनके जुड़ाव को साझा किया। लीडरशिप केवल राजनीति में नहीं है, बल्कि नौकरी व व्यवसाय में भी होती है। अपने आपको बतौर लीडर तैयार करें। उन्होंने बताया कि व्यक्ति के जीवन में 15 वर्ष से 30 वर्ष की उम्र में किया संघर्ष और परिश्रम जीवन पर्यंत मेहनत के फल के रूप में मिलता है। इसी उम्र में ऊर्जा सबसे ज्यादा होती है। अपनी इस ऊर्जा का इस्तेमाल अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए करें। विद्यार्थी अपने अभिभावकों और गुरुजनों की बात मानें।

अगर आपको लगता है कि कुछ गलत है तो अपनी मर्यादा का ध्यान रखते हुए इसे बतायें। आप देश का भविष्य है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि जीवन में कई उतार- चढ़ाव आते हैं, जो व्यक्ति को मजबूत करते हैं। ऐसे कठिन दौर में आपका संयमित होना जरूरी है। कक्षा 12 वीं की छात्रा निशा लोधी के सवाल का जवाब देते हुए मंत्री श्री पटेल ने कहा कि ऐसा कई बार होता है जब किसी सवाल का जवाब पता होने पर भी जवाब देने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। इसके लिए आपस में बात और वाद-विवाद में शामिल होना होगा। आप यह नहीं सोचे कि आपका उत्तर ग़लत हुआ तो क्या होगा। लगातार संवाद और प्रैक्टिस से बोलने का आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय गोटेगांव में विद्यार्थियों से संवाद में मंत्री श्री पटेल ने बताया कि इसी स्कूल में उन्होंने अपनी शिक्षा अर्जित की। यह स्कूल भवन चंदे की राशि जुटाकर तैयार किया गया था। एक सफल जीवन जीने के लिए व्यक्ति को यह आत्मसात करना चाहिए कि उसने जो चीज़ें किसी से ली है। वह उसे वापस लौटा रहा है या नहीं। यह लौटाने का गुण हम में होना चाहिए।छात्रा मुस्कान सिलावट द्वारा कबड्डी खेलने की इच्छा जाहिर करने पर मंत्री श्री पटेल ने स्टेडियम ग्राउंड शाम को 6 बजे से 7 बजे तक बच्चियों के लिए रिज़र्व रखे जाने की बात कही। स्कूली छात्र-छात्राओं द्वारा स्कूल चलें हम पर आधारित रोचक नाटिका का मंचन भी किया गया। मंत्री श्री पटेल और अन्य अतिथियों ने छात्रा हर्षिता ठाकुर को जिला मैथ्स ओलंपियाड में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित भी किया गया।

रेल सेवा पुरस्कार समारोह का भव्य आयोजन

झांसी। रेल सेवा पुरस्कार समारोह का आयोजन सीनियर रेलवे इंस्टिट्यूट, झाँसी के प्रांगण में भव्य रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दीपक कुमार सिन्हा द्वारा उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने वाले कुल 50 रेल कर्मियों को रेल सेवा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक श्री दीपक कुमार सिन्हा एवं महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती स्वेता सिन्हा के आगमन एवं पारंपरिक स्वागत से हुआ। वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री ब्रजेश कुमार चतुर्वेदी ने मंडल रेल प्रबंधक महोदय को पौध भेंट कर स्वागत किया, साथ ही महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती स्वेता सिन्हा का भी पौध देकर अभिनंदन किया गया। इसके पश्चात, मंडल रेल प्रबंधक एवं महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा द्वारा दीप प्रज्वलन कर समारोह का शुभारंभ किया गया। इसके बाद, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री ब्रजेश कुमार चतुर्वेदी द्वारा स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया गया, जबकि मंच संचालन श्री अतुल अग्रवाल द्वारा किया गया। मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में समर्पित कर्मचारियों की सराहना की और उनकी सेवाओं को रेलवे की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान बताया। इसके बाद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुतियाँ दी गई। सर्वप्रथम महिमा व्यास द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई, तत्पश्चात गणेश वंदना का आयोजन हुआ, जिसने समारोह में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वातावरण उत्पन्न किया। इसके साथ ही, वीरांगना लक्ष्मीबाई एवं झाँसी से संबंधित एक सुंदर नाटक की प्रस्तुति भी की गई, जिसे उपस्थित दर्शकों ने खूब सराहा। पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके बाद, मुख्यालय प्रयागराज से रेनिंग शील्ड प्राप्त ब्रांच ऑफिसर्स का सामूहिक फोटो सेशन हुआ। अंत में, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। इस समारोह में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री पी.पी. शर्मा, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय श्री आशुतोष चौरसिया, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अमन वर्मा, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री अखिल शुक्ल, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री विवेक नारायण, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर/परिचालन श्री शिवम श्रीवास्तव, वरिष्ठ मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री नरेंद्र सिंह, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर श्री नितिन गुप्ता, वरिष्ठ मंडल विद्युत ट्रैक्शन (SR.DEE/TRD) श्री मयंक शांडिल्य, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी श्री गिरीश कंचन सहित मंडल के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

धार्मिक कार्यक्रमों से बढ़ती है एकजुटता व खुशहाली: राहुल

श्रीमद भागवत कथाओं के आयोजन में शामिल हुए कृषि मंत्री के पुत्र

मुरैना,कांस। श्रीमद् भागवत कथा के श्रवण मात्र से ही जीव का कल्याण संभव हो जाता है। भागवत कथा जैसे धार्मिक आयोजनों से क्षेत्र में सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा मिलता है और खुशहाली बढ़ती है। यह बात मप्र शासन के कृषि मंत्री ऐंदल सिंह कंषाना के सुपुत्र राहुल सिंह कंषाना ने कही। वे शुक्रवार को सुमावली विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत मृगपुरा पंचायत के मजरा लीलाधर का पुरा एवं एनएच-44 हाईवे किनारे सेल्सटैक्स बैरियर के नजदीक चल रहे श्रीमद् भागवत कथा के आयोजनों में शामिल होने पहुंचें थे। ग्राम लीलाधर का पुरा में कथा व्यास पं. श्यामसुंदर शास्त्री द्वारा श्रद्धालुओं को कथा का रसपान कराया जा रहा है। आयोजन में परीक्षत श्रीमती सत्यवती तहसीलदार सिंह परमार है। वहीं सेल्सटैक्स बैरियर के नजदीक हो रहे कथा के आयोजन में विख्यात कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर महाराज द्वारा श्रोताओं को भागवत कथा का रसपान कराया जा रहा है। इस आयोजन में श्रीमती रामबाई-लेखराम सिंह परमार परीक्षत है। शुक्रवार को आयोजनों में शामिल होने पहुंचें कृषि मंत्री के सुपुत्र राहुल कंषाना ने कथा का श्रवण करने के बाद व्यासपीठ पर विराजमान कथाचार्यों से आर्शीवाद ग्रहण किया और क्षेत्र में सुख-शांति एवं समृद्धि की कामनाएं कीं। इस मौके पर उनके साथ बच्चू सिंह कंषाना खासखेड़ा, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, बबलू सरपंच नहरावली, एपी बारा, भोलू गुर्जर आदि मौजूद थे।

निगमायुक्त ने की निर्माण कार्यो की समीक्षा, दिए आवश्यक दिशा निर्देश

ग्वालियर,नसं.। नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने जनकार्य विभाग के अंतर्गत किए जा रहे निर्माण कार्यो की समीक्षा बैठक आयोजित कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में अपर आयुक्त श्री विजय राज, अधीक्षण यंत्री श्री जेपी पारा, कार्यपालन यंत्री श्री अजय पाल सिंह जादौन, श्री श्रीकांत कांटे, श्री सुशील कटारे एवं सहायक यंत्री सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बाल भवन के टीएलसी कक्ष में आयोजित बैठक में निगमायुक्त श्री संघ प्रिय ने शहर में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों की समीक्षा की।

समीक्षा के दौरान दक्षिण, ग्वालियर पूर्व, ग्वालियर एवं ग्रामीण विधानसभा अंतर्गत किए जाने वाले सडक निर्माण एवं अन्य निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि उक्त रोडों पर अन्य विभागों से जो भी कार्य होने हैं, वहां आपस में समन्वय कर अन्य विभागों से कार्य का पूर्णतः प्रमाण पत्र लें। इसके पश्चात समय सीमा में कार्य पूर्ण करायें तथा ऐसे कार्य जिनके वर्क ऑर्डर जारी हो चुके है, लेकिन उनके अभी तक कार्य प्रारंभ नहीं हुआ उनके विलम्ब का कारण सहित जानकारी प्रस्तुत करें। इसके साथ ही वर्ष 2024-25 के मौलिक निधि के ऐसे प्रस्ताव जिसमें सक्षम स्वीकृति हो चुकी है। उनकी निविदा जारी करने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि टीएल बैठक में वार्ड एवं विधानसभा वार निर्माण कार्यों की जानकारी विस्तार से प्रस्तुत करें। इसके साथ ही अन्य बिंदुओं पर चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

जिलाधिकारी ने ग्राम्य विकास विभाग के ब्लॉक रिसोर्स पर्सन (बीआरपी) का लिया साक्षात्कार

अलीगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में शुक्रवार को विकास भवन सभागार में ग्राम्य विकास विभाग के ब्लॉक रिसोर्स पर्सन (बीआरपी) पद के लिए अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लिया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि विभिन्न विकास योजनाओं के सुचारु क्रियान्वयन एवं निगरानी में बीआरपी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने निर्देशित किया कि चयन प्रक्रिया पूर्णतः पारदर्शी, निष्पक्ष एवं योग्यता आधारित होनी चाहिए ताकि ब्लॉक स्तर पर योजनाओं के प्रभावी संचालन में गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। सीडीओ प्रखर कुमार सिंह ने बताया कि बीआरपी के लिए 57 व्यक्तियों ने आवेदन किया था, जिसमें जांचोपरांत 08 महिलाओं समेत 49 आवेदन पात्र पाए गए। जिले में 13 बीआरपी का चयन किया जाना है। साक्षात्कार के दौरान अभ्यर्थियों से सोशल ऑडिट, मनरेगा, ग्राम स्तर पर संचालित योजनाओं, मनरेगा जॉब कार्ड, पंचायतीराज का ढ़ांचा समेत अन्य सवाल किए गए। साक्षात्कार के दौरान एडीएम न्यायिक अखिलेश कुमार, जिला विकास अधिकारी आलोक आर्य, परियोजना निदेशक डीआरडीए भाल चन्द त्रिपाठी उपस्थित रहे।

सभी छात्रावासों में बनेगी नशा-मुक्ति समितियां

भोपाल,ब्यूरो। प्रदेश में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत समस्त छात्रावासों में नशा-मुक्ति समितियां गठित की जायेंगी, जो शैक्षणिक संस्थाओं में सक्रिय रहेंगी और छात्र-छात्राओं को नशा और उसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करेंगी। प्रमुख सचिव सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण श्रीमती सोनाली पोंक्षे वायंगणकर की अध्यक्षता में आयोजित राज्य स्तरीय नशा-मुक्ति समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया। प्रमुख सचिव श्रीमती वायंगणकर ने कहा कि भारत सरकार ने अगस्त 2020 से नशा-मुक्त भारत अभियान शुरू किया था। इसमें प्रदेश के सभी 55 जिलों को शामिल किया गया है।

महत्वपूर्ण सूचना

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये पैसेंजर ट्रेन को मेमू ट्रेन (8-कार) में परिवर्तित किये जाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नवत् हैः-

मौजूदा गाड़ी सं.	परिवर्तित गाड़ी सं.	कहाँ से कहाँ तक	प्रारम्भिक स्टेशन से प्रभावी तिथि
51887	64641	ग्वालियर जं. से इटावा जं.	09.04.2025
51888	64642*	इटावा जं. से ग्वालियर जं.	09.04.2025
51889	64643	ग्वालियर जं. से भिण्ड	09.04.2025
51890	64644	भिण्ड से ग्वालियर जं.	09.04.2025
54162	64646	कानपुर सेन्ट्रल से खजुराहो	09.04.2025
54161	64645	खजुराहो से कानपुर सेन्ट्रल	10.04.2025

नोटः गाड़ी सं. 64642 के समय में संशोधन किया गया है, यह गाड़ी इटावा स्टेशन से 10:00 बजे के स्थान पर 10:05 बजे प्रस्थान करेगी।

नोटः ट्रेनों की समय-सारणी से सम्बन्धित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139 या Rail Madad Mobile Aap या वेबसाईट www.railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR 612/25(MG)

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक, रामविलास शर्मा द्वारा पहल प्रिंटर्स प्लाट नं. 27 बांके सैंथिया टाउन मौजा ककुआ आगरा, उत्तरप्रदेश से मुद्रित व 192,मानस नगर शाहगंज बोदला रोड आगरा (उत्तरप्रदेश) से प्रकाशित। संपादक- रामविलास शर्मा मोबा.-9329077393
स्थानीय संपादक- संतोष शर्मा मो.97202 02708, email-sandhyapahal@yahoo.com आर.एन.आई.पंजीयन क्रमांक UPHIN/2008/25338 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र मुरैना ही रहेगा।